वर्ष 26 | अंक 8 | मार्च 2025

ISSN No. 2582-4546

₹ 50

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

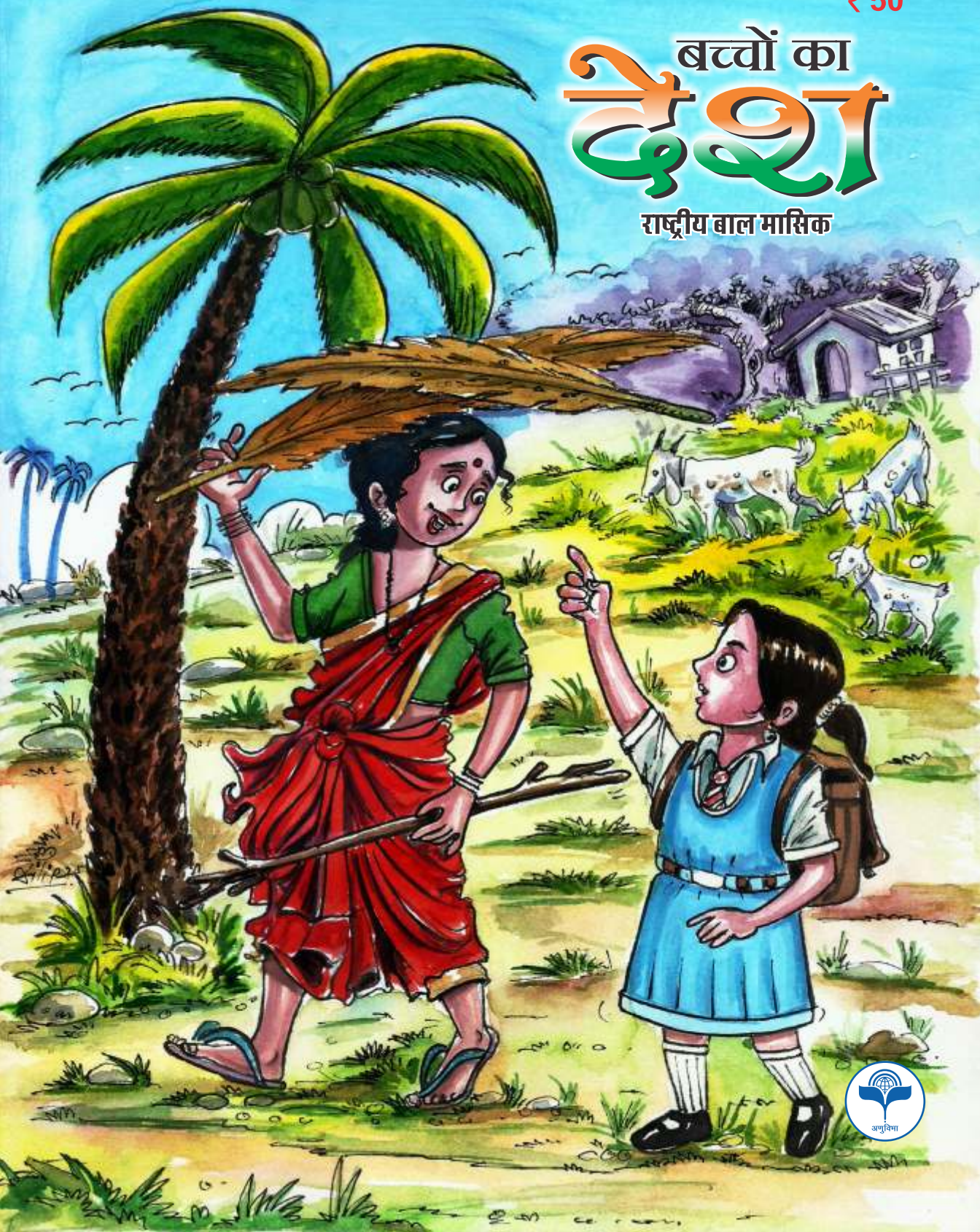

क्या आप जानते हो ?

- सन् 1993 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 22 मार्च को विश्व जल दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।
- इसका उद्देश्य है जन–जन को मीठे पानी के महत्त्व से परिचित कराना।
- सन् 2015 में संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य देशों ने मिल कर 17 लक्ष्य निर्धारित किए और इन्हें सन् 2030 तक पूरा करने का संकल्प व्यक्त किया।
- इनमें छठा लक्ष्य है– सभी के लिए स्वच्छ पीने का पानी और स्वच्छता सुनिश्चित कराना।

पानी बहुत कीमती है, इसे व्यर्थ में नहीं बहाना चाहिए।

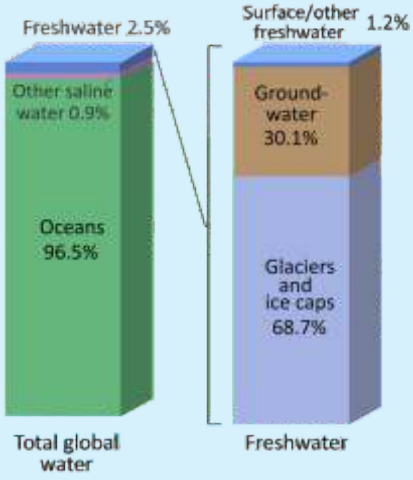

- हमारी पृथ्वी की सतह का 71% भाग पानी से ढका है और पृथ्वी पर उपलब्ध कुल पानी का 96.5% हिस्सा समुद्री पानी है।
- समुद्री पानी इतना खारा होता है कि पीने के काम नहीं लिया जा सकता, इसलिए केवल 1% पानी ही पेयजल के रूप में हमें उपलब्ध है।
- पानी हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से मिल कर बनता है जिसका केमिकल फॉर्मूला है– H_2O
- पृथ्वी पर जीवन के लिए पानी आवश्यक है। इनसान, पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े और साथ ही वनस्पति अर्थात पेड़–पौधे पानी के बिना जीवित नहीं रह सकते।
- हमारे शरीर का 60–70 प्रतिशत भाग पानी ही है।

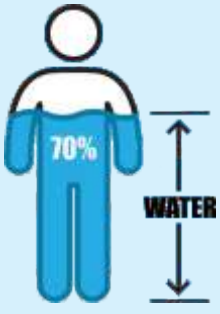

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 26 अंक : 8 मार्च, 2025

सम्पादक : संचय जैन
सह सम्पादक : प्रकाश तातेड़
प्रबन्ध सम्पादक : निर्मल राँका, पंचशील जैन
कार्यालय प्रभारी : चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक्स : गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन : दिलीप शर्मा

अध्यक्ष : प्रताप सिंह दुगड़
महामन्त्री : मनोज सिंघवी
कोषाध्यक्ष : राकेश बरड़िया
संयोजक सदस्यता : विनोद बच्छावत
संयोजक विद्यालय सदस्यता : क्षितिज व्यास

प्रकाशक :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
www.anuvibha.org
9414343100, 9351552651

सहयोगी संस्थान :
भागीरथी सेवा प्रन्यास, जयपुर

- 'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है।
- समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
के
गौरवशाली प्रकाशन
अणुव्रत
बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

सदस्यता फॉर्म

मैं 'अणुव्रत'/ 'बच्चों का देश' पत्रिका की सदस्यता लेना चाहता / चाहती हूँ। सदस्यता शुल्क नीचे दिये विवरण अनुसार जमा करा रहा/ रही हूँ -

अवधि	'अणुव्रत'	'बच्चों का देश'
1 वर्ष	₹ 800	₹ 500
3 वर्ष	₹ 2200	₹ 1350
5 वर्ष	₹ 3500	₹ 2100
योजकोगी (15 वर्ष)*	₹ 21000	₹ 15000

बैंक विवरण
ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
IDBI BANK
Branch Rajsamand
A/c No. : 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

नाम _____ दिनांक _____
पता _____
पिन ☐☐☐☐☐☐ मोबाइल _____ ईमेल _____
'अणुव्रत' ₹ _____ एवं 'बच्चों का देश' ₹ _____ कुल राशि ₹ _____ नगद ☐ बैंक ☐ द्वारा भुगतान किया।

हस्ताक्षर आवेदक _____ हस्ताक्षर प्राप्तकर्ता _____

सदस्यता फॉर्म इस पते पर भेजें
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, बॉक्स सं. 28,
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
मोबाइल : 9414343100, 9116534512

कार्यालय उपयोग हेतु
रसीद संख्या _____ दिनांक _____
प्राप्ति दिनांक _____ सदस्यता क्रमांक _____
सदस्यता प्रारंभ माह _____

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित।

कविता

08 **मुकुट सलोना**
अनीता गंगाधर शर्मा

22 **सयानी धूप**
डॉ. आर.पी. सारस्वत

22 **जल के बिना...**
लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

26 **होली पर्व का संदेश**
डॉ. देशबंधु 'शाहजहांपुरी'

27 **होली का त्योहार**
मधु माहेश्वरी

27 **हारी सदा बुराई**
शिवचरण चौहान

स्तम्भ

05 प्रेरक वचन
06 सम्पादक की पाती
07 महाप्रज्ञ की कथाएँ
16 आओ पढ़ें : नई किताबें
18 दस सवाल : दस जवाब
25 सुडोकू
28 नन्हा अखबार
33 अन्तर ढूँढ़िये
37 परख
38 कलम और कूँची
41 व्हाट्सएप कहानी
43 सखियों की बाड़ी
45 रंग भरो प्रतियोगिता, उत्तरमाला

English Section

46 **The Oak and the Reeds**
47 **Jo Jeeta Woh Sikandar**
Ramendra Kumar
49 **Science of Living**
Birthday Greeting
50 **Wondrous Webs of Beauty**
Shanthini Govindan
52 **The Unlucky Man**
54 **Comic : Clever Children**
56 **Tell me why ?**

विविधा

13 **दिमागी कसरत**
प्रकाश तातेड़

17 **वर्ग पहेली**
राधा पालीवाल

32 **चित्रकथा**
संकेत गोस्वामी

40 **बूझो तो जानें**
कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

40 **आप कितने...**
चाँद मोहम्मद घोसी

59 **अणुव्रत की बात**
मनोज त्रिवेदी

आलेख

10 **छोटे फलों में हैं बड़े गुण**
डॉ. विनोद गुप्ता

11 **बालक बना महान : हेमू कालाणी**
डॉ. सुधा शर्मा 'पुष्प'

14 **बच्चों का सिनेमा : नौनिहाल**
मुकेश पोपली

30 **महाकुम्भ**

33 **राज्य पक्षी–19 : दूधराज**
डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी

34 **जो जीते हैं जमाने के लिए**
शिखर चन्द जैन

42 **विश्व विरासत स्थल–15**
नरेन्द्र सिंह 'नीहार'

44 **जीवन का आधार है संयम**
नीलम राकेश

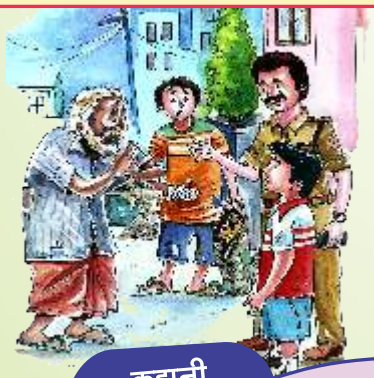

कहानी

09 **गले का गमछा**
रजनीकान्त शुक्ल

15 **खुशी के आँसू**
डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

19 **विज्ञान ही जिन्दगी...(नाटिका)**
मनोहर चमोली 'मनु'

23 **चिंटू का विडियो गेम**
वंदना बाजपेयी

35 **नारियल का झाड़ू**
प्रदीप कुमार शर्मा

36 **छोटू की नादानी**
ओम प्रकाश तँवर

39 **बगीचे का जन्मदिन**
संदीप पांडे

विज्ञान...

महापुरुषों की दृष्टि में

विज्ञान मानवता के लिए एक खूबसूरत उपहार है, इसका हमें सदुपयोग करना चाहिए।

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर श्रेष्ठ रूप से निर्भर है और इसके बारे में हर कोई जानता है।

कार्ल सेगन

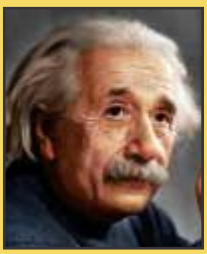

विज्ञान धर्म के बिना लंगड़ा है और धर्म विज्ञान के बिना अंधा है।

अल्बर्ट आइंस्टीन

विज्ञान में इतनी विभूति है कि वह काल के चिह्नों को भी मिटा दे।

प्रेमचन्द

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

सम्पादक की पिछली पाती में हमने जाना था कि एक सीमा से अधिक चिन्ता करना या तनाव रखना नुकसानदायक होता है। फिर यह तनाव पढ़ाई को लेकर हो, परीक्षा को लेकर हो या परिवार में या मित्रों से आपसी सम्बन्धों को लेकर। कभी-कभी अपने स्वभाव या आदतों को लेकर भी हम तनाव पाल लेते हैं।

हमने यह भी जाना कि यह बात प्रायः सब जानते हैं कि हमें तनाव क्यों होता है और उससे बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए? हाँ, बच्चे भी इस बारे में बहुत कुछ जानते हैं! लेकिन समस्या यह है कि हम जानते तो हैं लेकिन वैसा करते नहीं। इस बार एक स्कूल में मैंने इसी विषय पर बच्चों से बात की। बच्चों ने यह स्वीकार किया कि- झूठ बोलना, झगड़ा या मारपीट करना, गाली-गलौच करना, उलटे-सीधे वीडियो देखने में समय बरबाद करना, इधर-उधर कचरा फैलाना, चोरी से किसी का सामान लेना, स्कूल में पढ़ाई पर ध्यान न देकर मस्ती करते रहना, अशिष्ट व्यवहार करना, ताने मारना- यह सब करना अच्छा नहीं है, नहीं करना चाहिए। इससे समस्याएँ पैदा होती हैं और तनाव बढ़ता है।

बच्चों ने यह भी माना कि- नियमित पढ़ना, विनम्रता से बात करना, अपनी गलती को स्वीकार कर लेना, बड़ों का आदर करना, जल्दी सोना और जल्दी उठना, सफाई का ध्यान रखना- शरीर की भी और अपने आस-पड़ौस की भी, किसी की तकलीफ में मदद करना- यह सब करना हमारे व्यक्तित्व को निखारता है, तनाव से बचाता है और हमें खुशमिजाज रखता है।

इस बात को लेकर बच्चों ने अलग-अलग जवाब दिए कि हम जानते तो हैं पर करते क्यों नहीं? किसी ने परिस्थितियों का दोष बताया, किसी ने संगति का असर, किसी ने उचित मार्गदर्शन का अभाव तो किसी ने सब भाग्य का खेल बताया। एक बच्ची ने बड़ा सुन्दर जवाब दिया- ''हमारा खुद पर नियन्त्रण नहीं रह पाता।'' सच है, सेल्फ-कंट्रोल न होने से हमें जो नहीं करना चाहिए वह कर लेते हैं और जो करना चाहिए उसे टालते रहते हैं। हमारी यही कमजोरी हमें परेशान करती है, कभी गुस्सा दिलाती है तो कभी उदास करती है, और अनावश्यक तनाव पैदा कर देती है। नशा करने जैसे गलत रास्ते पर धकेलने में भी इसी कमजोरी का हाथ होता है।

चर्चा चल ही रही थी कि एक बच्चे ने पूछा- ''सर, सेल्फ-कंट्रोल बढ़ाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?'' यह बहुत ही अच्छा प्रश्न था। हर बच्चे को यह प्रश्न पूछना चाहिए- खुद अपने आप से। बहुत सम्भावना है कि आपको खुद से ही उत्तर मिल जाए। यदि नहीं मिले तो अपने से बड़ों से पूछना चाहिए। मैंने बच्चों से भी यही कहा कि पहले सब यह प्रश्न खुद से पूछो। आपको जो भी जवाब मिलता है उस पर हम अगली बार बात करेंगे।

तो प्यारे पाठको, आपने भी ढूँढ़ना शुरू कर दिया है ना इस प्रश्न का जवाब? सेल्फ-कंट्रोल यानी खुद पर नियन्त्रण कैसे बढ़ाएँ?

ढेरों शुभकामनाएँ!

आपका ही,
संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

पारस से भी मूल्यवान

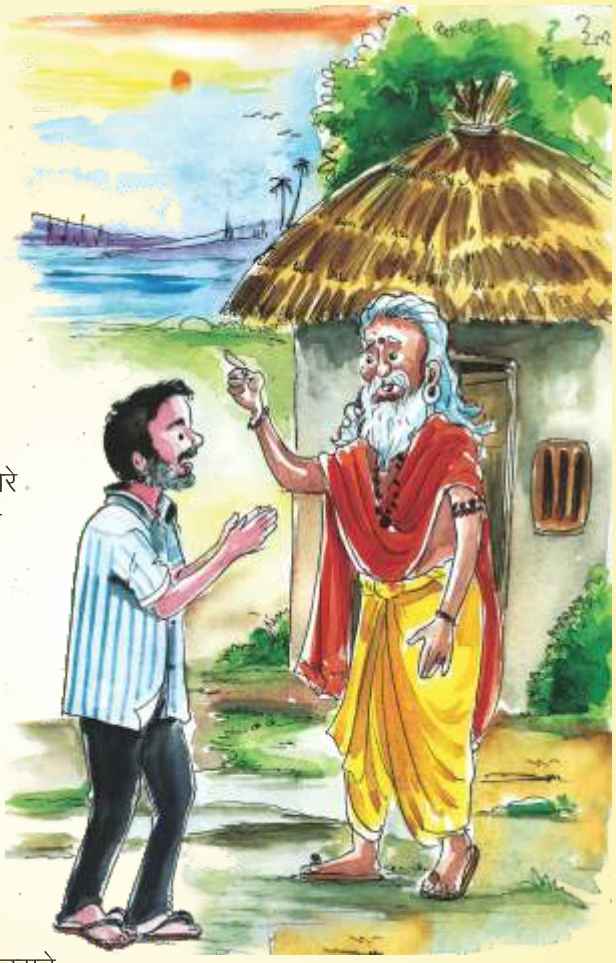

एक व्यक्ति संन्यासी के पास आया और बोला– ''बाबा! मैं भूखा हूँ। कुछ खाने को दो।'' संन्यासी ने कहा– ''मेरे पास क्या है जो तुझे दूँ? मैंने तो सब कुछ छोड़ दिया है। तुझे क्या दूँ?'' वह बोला– ''नहीं, यह नहीं हो सकता। बड़ी आशा लिये आया हूँ आपके पास, निराश नहीं लौटूँगा। कुछ तो देना ही होगा।'' बहुत आग्रह करने लगा। संन्यासी ने सोचा, बड़ी मुसीबत है। पास में एक दाना भी नहीं है। इस बेचारे को क्या दूँ? यह भी अपना हठ नहीं छोड़ रहा है। क्या करूँ? अन्त में संन्यासी बोला– ''भाई, मेरे पास तो कुछ है नहीं। इधर नदी की ओर चले आओ। मैंने एक पत्थर कल ही वहाँ फेंका है। वह पारस है। लोहे को सोना बनाता है। उस पत्थर को लोहे से छुआओ, लोहा सोना बन जायेगा। जाओ, वह ले जाओ।''

पारस का नाम सुनते ही उस व्यक्ति के चेहरे पर खुशी चमकने लगी। मन भविष्य की कल्पनाओं से भर गया। वह दौड़ा–दौड़ा नदी के तट पर आया। पारस को देखा। चमचमा रहा था धूप में। उसे उठाने के लिए हाथ बढ़ाया। एक विचार आया और वह हाथ बीच में ही रुक गया। उसने सोचा कि संन्यासी ने पारस को क्यों फेंक दिया? क्या कोई व्यक्ति पारस को प्राप्त कर उसे यों ही फेंक देता है! कभी नहीं। क्या यह पारस पत्थर नकली है? नहीं, नकली भी नहीं है। असली है तो फिर संन्यासी ने इसे फेंका क्यों? जरूर ही संन्यासी के पास इससे भी कोई अधिक मूल्यवान चीज होगी, तभी तो उसने इस कम मूल्य वाले पत्थर को फेंका है।

वह मुड़ा, संन्यासी के पास आकर बोला– ''महाराज! मुझे पारस नहीं चाहिए। मुझे तो वह वस्तु दें जिसे पाकर आपने पारस को फेंका था।'' संन्यासी ने धैर्य पूर्वक कहा– ''मुझे ईश्वर तक जाने का रास्ता मिल गया है इसीलिए अब मुझे पारस पत्थर की कोई जरूरत नहीं है।''

कथा बोध :

किसी भी वस्तु का मूल्य हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है। कुछ व्यक्ति धन–सम्पत्ति में सुख खोजते हैं लेकिन किसी के लिए धन–सम्पत्ति का अधिक मूल्य नहीं, वे बस कम में ही सन्तोष कर मन की खुशी को अधिक महत्त्व देते हैं।

मुकुट सलोना

बैंगन कद्दू प्याज टमाटर,
एक खेत में बैठे थे।
आपस में ही अकड़-अकड़ के,
मुखड़े सबके ऐंठे थे।।

बैंगन बोला मैं हूँ राजा,
ताज-सजा है सिर मेरे,
तू तो है मोटा-सा कद्दू,
है डंठल बस सिर तेरे।।

ठहर-ठहर ओ छोटे बैंगन,
तुझको मैं बतलाता हूँ।
मेरी इस ताकत का लोहा,
तुझसे ही मनवाता हूँ।।

मैं हूँ मोटा कद्दू राजा,
हरी-बेल पर आता हूँ।
तेरे जैसे ओ बैंगन जी,
काँटे नहीं चुभाता हूँ।।

रोक बीच में उन्हें टमाटर,
गोल घुमा आँखें बोला।
अरे-अरे मुझको ओ भैया,
कैसे तुमने कम तोला।।

मेरे सिर भी मुकुट सलोना,
स्वाद बने मुझसे भाजी।
मम्मी-पापा, दादी-दीदी,
खाकर मुझको सब राजी।।

प्याज महोदय तुम क्यों चुप हो,
कुछ तो तुम भी अब बोलो।
अपने दिल के राज फटाफट,
जल्दी से सारे खोलो।।

अपने-अपने गुण हैं सबमें,
ना कोई ऊपर-नीचे।
दाँगें फिर काहे अपनों की,
आपस में हम-तुम खींचें।।

मिल जाते हैं जब हम सारे,
तब सब्जी का स्वाद बढ़े।
कुछ कहावतें बनी हमी पर,
और किस्से अनेक गढ़े।।

बात प्याज की सबने मानी,
फिर तो सारे खूब मिले।
झूमे फिर मस्ती में सारे,
मिटे दिलों के सभी गिले।।

अनीता गंगाधर शर्मा
अजमेर (राजस्थान)

गले का गमछा

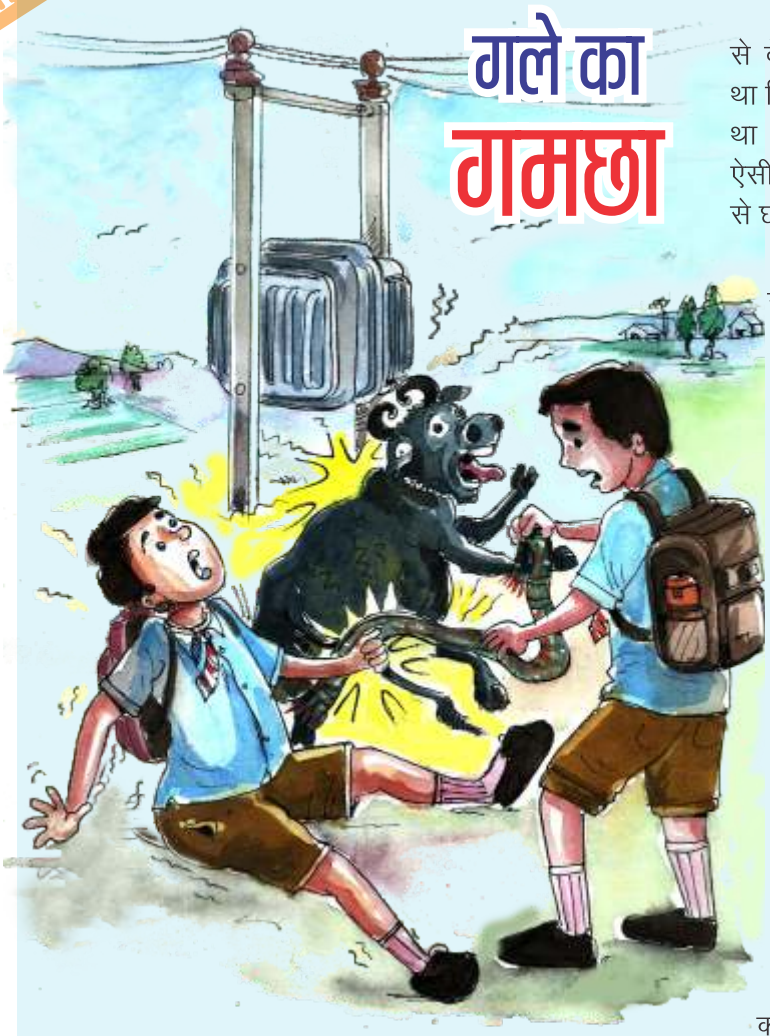

मध्यप्रदेश में राजगढ़ तहसील के अन्तर्गत कचहरी गाँव है। गाँव कुंडीबे का छात्र गोपालसिंह सौंधिया कचहरी के शासकीय हाईस्कूल में पढ़ता था। रामेश्वर उसका खास दोस्त था। दोनों एक साथ स्कूल जाते और साथ–साथ ही स्कूल से वापस आते। एक दिन घर से तैयार होकर वे आपस में बातें करते हुए स्कूल की ओर जा रहे थे।

अचानक रामेश्वर की निगाह बिजली के ट्रांसफॉर्मर की ओर गई जिसके पास एक भैंस पड़ी हुई अजीब तरह से अपने पैर चला रही थी। ध्यान से देखने से साफ महसूस हो रहा था कि उसे बिजली का झटका लगा था जिससे बचने के लिए ही वह ऐसी हलचल कर रही थी और पीड़ा से छटपटा रही थी।

रामेश्वर के साथ–साथ गोपाल की निगाह भी उस ओर गई। रोज उधर से गुजरने और सभी को जानने के कारण उन्हें पता था, इसलिए रामेश्वर बोल पड़ा– ''अरे, यह तो प्रेमसिंह की भैंस है। हाँ, हमें इसे बचाना चाहिए। आस–पड़ोस तो कोई दिख नहीं रहा है। आओ, चलो देखते हैं।''

भैंस की करुण आवाज में छटपटाना देखा नहीं जा रहा था। इसलिए स्कूल जाना छोड़कर गोपाल भी रामेश्वर के साथ–साथ उस भैंस की ओर मुड़ गया। जब तक गोपाल उसके पीछे–पीछे चलता हुआ उसके करीब आ पाता रामेश्वर उस भैंस की पूँछ पकड़कर उसे ट्रांसफॉर्मर से अलग हटाने की कोशिश करने लगा। वह सोच रहा था कि इस तरह वह उस भैंस को बिजली के करंट से छुटकारा दिला पाएगा।

मगर यह क्या हुआ! पूँछ पकड़ते ही उसकी जोर की चीख निकल गई। वह खुद भी भैंस के साथ बिजली की चपेट में आ चुका था। गोपाल जो पीछे था, एक पल को यह देखकर घबरा गया। उसने तत्काल सोचा कि अगर मैंने भी रामेश्वर को इसी तरह छुड़ाने की कोशिश की तो मैं भी बिजली से चिपक जाऊँगा।

देखें पृष्ठ 13...

छोटे फलों में हैं बड़े गुण

प्रकृति ने धरती पर कई तरह के फल पैदा किए हैं। आकार की दृष्टि से कुछ फल छोटे हैं और कुछ फल बड़े, पर हैं सभी गुणकारी।

अंगूर का फल गुच्छों में लगता है। इसकी कई प्रजातियाँ हैं, जिनमें हरा और काला या बैंगनी मुख्य हैं। इन्हें सुखाकर किशमिश और मुनक्का बनाई जाती है। यह रेशे प्रधान फल है, जिसमें अधिकांश मात्रा जल की होती है। इसमें विटामिन ए, बी व सी प्रचुर मात्रा में होता है। खनिजों में कैल्शियम, फॉस्फोरस तथा आयरन की अधिकता होती है। इसमें ग्लूकोज शर्करा अधिक होने से इसे खाते ही शरीर को ऊर्जा मिलती है और हम अपने आपको चुस्त तथा स्फूर्तिवान पाते हैं। अंगूर का सेवन खून की कमी में लाभदायक है। मूत्र सम्बन्धी रोगों से राहत दिलाता है। गर्मी में इसके सेवन से प्यास बुझती है तथा गला तर रहता है।

आंवला को अमृत फल की संज्ञा दी गई है। ताजा आंवला हरा होता है। इससे अचार, मुरब्बा, चटनी, शर्बत आदि बनाए जाते हैं। यह काफी शक्तिवर्द्धक होता है। तभी तो च्यवनप्राश का यह मुख्य घटक होता है। विटामिन सी का तो यह भंडार है।

जामुन का रंग गहरा जामुनी या काला होता है। जामुन मीठा और स्वादिष्ट होता है। इसके सेवन से जीभ भी जामुनी हो जाती है। जामुन रेशे प्रधान फल है। कैल्शियम तथा फॉस्फोरस अधिक होने से यह हड्डियों को मजबूत बनाता है। मधुमेह के रोगियों के लिए जामुन और उसकी गुठलियों के चूर्ण का सेवन लाभदायक माना जाता है। जामुन का शर्बत तुरन्त शक्ति प्रदान करता है। इसके सेवन से मुहाँसे भी दूर होते हैं।

नीबू का कच्चा फल हरा तथा पकने पर पीला हो जाता है। इसका इस्तेमाल शिकंजी, अचार, चटनी, शर्बत आदि में होता है। नीबू में मनमोहक सुगंध होती है। इसका खट्टापन अत्यन्त रुचिकर होता है। इसमें सभी आवश्यक पोषक तत्व, विटामिन तथा खनिज लवण होते हैं। यह स्वास्थ्यवर्द्धक और सौंदर्यवर्द्धक होता है।

सिंघाड़ा का फल कठोर बाहरी आवरण के भीतर होता है। आकार में यह त्रिकोणाकार होता है। इसमें विटामिन ए, बी तथा सी की प्रधानता होती है। खनिजों में कैल्शियम, फॉस्फोरस, आयरन, कॉपर, मैग्नीज, मैग्नीशियम, सोडियम, पोटेशियम और आयोडीन होते हैं। यह औषधीय गुणों से भरपूर होता है।

डॉ. विनोद गुप्ता
मन्दसौर (मध्य प्रदेश)

बालक बना महान

क्रांतिकारी हेमू कालाणी

प्रायः बच्चे कहा करते हैं कि मैं बड़ा होकर देश–सेवा का कार्य करूँगा या मैं बड़ा होकर देशभक्त बनूँगा, तो कुछ कहते हैं कि हम तो अभी बच्चे हैं, हम देश के लिए क्या कर सकते हैं? देशभक्ति के लिए कोई आयु निश्चित नहीं है। छोटी आयु में भी देश–सेवा की जा सकती है और छोटे–से जीवन–काल में भी देश के लिए समर्पित हुआ जा सकता है, इसका प्रमाण हैं– क्रांतिकारी हेमू कालाणी।

बचपन से ही साहसी

हेमू कालाणी का जन्म सिंध के सक्खर (अब पाकिस्तान में है) में 23 मार्च, 1923 को हुआ था। उनकी माता का नाम जेठीबाई और पिता का नाम पेसूमल कालाणी था। हेमू मेधावी छात्र थे, अच्छे तैराक तथा धावक भी थे। वे तैराकी में कई बार पुरस्कृत हुए थे। वे बचपन से ही साहसी थे। स्कूल में पढ़ाई करने के साथ–साथ क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय हो गए थे।

जब वे मात्र सात वर्ष के थे, तभी तिरंगा लेकर अँग्रेजों की बस्ती में चले जाते थे और अपने मित्रों के साथ निर्भीक होकर सभाएँ करते थे। अँग्रेज अधिकारी जब अपने सैनिकों के साथ भ्रमण के लिए निकलते थे तो लोग भय से अपने घर में बन्द हो जाते थे, किन्तु साहसी हेमू उन अँग्रेजों पर छींटाकशी करते हुए अपने मित्रों के साथ निर्भीक स्वर में गाते हुए घूमते–

'जान देना देश पर, यह वीरों का काम है,
मौत की परवाह न कर, जिसका हकीकत नाम है।'

स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय

सन् 1942 में गाँधी जी ने 'अँग्रेजों भारत छोड़ो' तथा 'करो या मरो' का नारा दिया। इससे देश में अँग्रेजों के विरुद्ध क्रांतिकारी गतिविधियाँ तेज हो गई थीं। हेमू भी 'स्वराज सेना' की ओर से मुख्य भूमिका में इससे जुड़ गए। उन्होंने 'अँग्रेजों, भारत छोड़ो' नारे के साथ सिंधवासियों में जोश और स्वाभिमान भर दिया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं स्वदेशी अपनाकर देश को स्वावलम्बी बनाने के लिए देशवासियों को प्रेरित किया। विदेशी हुकूमत को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया और स्वतन्त्रता आन्दोलन की सक्रिय गतिविधियों में शामिल हो गए।

देश के लिए अदम्य साहस

उन दिनों बलूचिस्तान में उग्र आन्दोलन चल रहा था। पता चला कि उस आन्दोलन को कुचलने के लिए 23 अक्टूबर, 1942 की रात अँग्रेज सैनिकों, हथियारों व बारूद से भरी रेलगाड़ी सिंध के रोहिणी स्टेशन से रवाना होकर सक्खर शहर से गुजरती हुई बलूचिस्तान के क्वेटा नगर जाएगी। यह सुनकर सक्खर के हेमू कालाणी ने अपने दो साथियों– नंद और किशन के साथ रेल की पटरी को अस्त–व्यस्त कर रेलगाड़ी को गिराने की योजना बनाई।

रेलगाड़ी गुजरने से पहले ही हेमू कालाणी ने रिंच और हथौड़े की सहायता से रेल की पटरियों की फिशप्लेटों को उखाड़ना शुरू कर दिया। अन्य दो साथी निगरानी कर रहे थे। रात की खामोशी में हथौड़ा चलाने की आवाजें दूर तक जा रही थीं। उसे सुनकर दूर गश्त कर रहे सिपाही दौड़कर आए। नंद और किशन तो वहाँ से भाग कर छिप गए किन्तु हेमू कालाणी को उन्होंने पकड़ लिया।

मनोविज्ञान और दृढ़ता

जेल में लाकर उन पर कोड़े बरसाए गए और उनके दोनों सहयोगियों का नाम पूछा गया। हेमू का हर बार यही उत्तर होता था– 'मेरे दो साथी थे– रिंच और हथौड़ा।' हेमू कालाणी की उम्र मात्र 19 वर्ष कुछ माह होने के कारण देशद्रोह के अपराध में फाँसी की जगह आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। अनुमोदन के लिए निर्णय हैदराबाद (सिंध) स्थित सेना मुख्यालय के प्रमुख अधिकारी कर्नल रिचर्डसन के पास भेजा गया। कर्नल रिचर्डसन ने ब्रिटिशराज का खतरनाक शत्रु करार देते हुए हेमू कालाणी की सजा को फाँसी में बदल दिया। उस समय के सिंध के गणमान्य लोगों ने वायसराय से उसको फाँसी की सजा न देने की अपील की। वायसराय ने इस शर्त पर यह स्वीकार किया कि हेमू कालाणी अपने साथियों का नाम और पता बताए, पर उसने यह शर्त अस्वीकार कर दी।

जीवन का सपना

उनके जीवन का एक ही सपना था कि क्रांतिकारी शहीद भगत सिंह की तरह देश के लिए फाँसी के फंदे पर झूल जाएँ। वे अपने गले में फाँसी का फंदा डालकर शहीदों को याद करते थे।

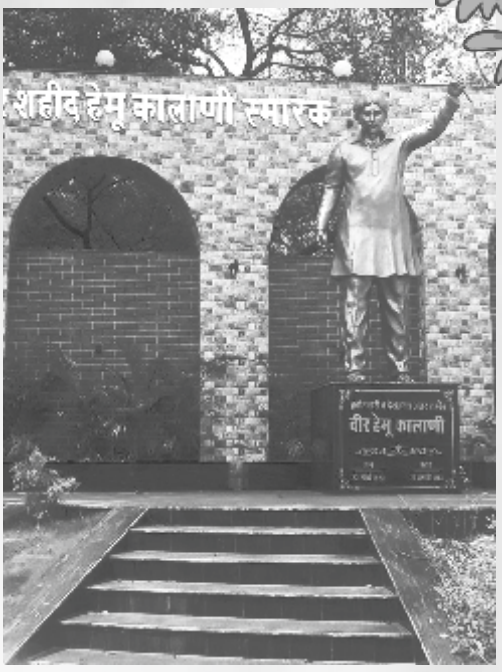

आखिर उनका सपना सच हो गया। उन्हें फाँसी की सजा सुना दी गई। फाँसी से पहले उनसे आखिरी इच्छा पूछी गई, तो उन्होंने भारतवर्ष में फिर से जन्म लेने की इच्छा व्यक्त की। 21 जनवरी, 1943 को प्रातः सात बजकर 55 मिनट पर हेमू कालाणी को फाँसी पर लटकाया गया। हेमू ने 'इंकलाब–जिंदाबाद' और 'भारत माता की जय' के नारे लगाते हुए स्वयं अपने हाथों से फंदा गले में डाला, मानो फूलों की माला पहन रहे हों।

अमर क्रांतिकारी के प्रति श्रद्धांजलि

मात्र 19 वर्ष की आयु में अमर शहीद हेमू कालाणी का बलिदान सदैव याद रखा जाएगा। स्वतन्त्रता के बाद संसद–परिसर में उनकी प्रतिमा स्थापित हुई और भारत सरकार ने उनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया। देशभर में उनकी प्रतिमाएँ स्थापित की गई तथा अनेक कॉलोनी, चौक, मार्ग और उद्यानों का नाम उनके नाम पर रखा गया।

डॉ. सुधा शर्मा 'पुष्प'
दिल्ली

''गले में गमछा'' पृष्ठ 9 का शेष....

क्या करूँ? अभी तक तो सिर्फ भैंस को ही बचाना था परन्तु अब तो मेरे दोस्त की जान खतरे में आ गई है। उसे याद आया कि ऐसे में सबसे पहले तो स्विच ऑफ करके बिजली के प्रवाह को रोकना होता है। मगर यहाँ तो ऐसा करना सम्भव नहीं था क्योंकि ट्रांसफॉर्मर का स्विच कहाँ था, उसे नहीं मालूम था।

दूसरा उपाय था कि किसी सूखी लकड़ी या कपड़े से उसे करंट से दूर किया जाए। उसने तुरन्त चारों ओर अपनी निगाहें दौड़ाकर देखा मगर उसे कोई ऐसी सूखी लकड़ी नजर नहीं आई जिसका वह उपयोग कर सकता। अब कपड़े के बारे में सोचा तो उसे अपने गले में बँधे हुए गमछे का ख्याल आया। उसने गले के गमछे को तुरन्त अपने गले से निकाला।

अब वह गमछे की सहायता से रामेश्वर को बिना छुए उसे भैंस से अलग खींचने का प्रयास करने लगा। लगातार कोशिश करने पर आखिरकार उसे सफलता मिल गई और वह रामेश्वर के हाथों को भैंस की पूँछ से दूर खींचकर हटाने में सफल हो गया। इस बीच वहाँ किसी ने देख लिया तो कई लोग जमा हो गए जिन्होंने मिलकर रस्सी और लाठी की मदद से उस भैंस को भी करंट से अलग कर दिया। इस तरह से उस भैंस की जान भी बच गई।

रामेश्वर को तुरन्त डॉक्टर के पास ले जाया गया। जहाँ उपचार मिलने के बाद वह स्वस्थ हो गया। अगले दिन जब गोपाल स्कूल पहुँचा तो उसकी बहादुरी की चर्चा उससे पहले स्कूल पहुँच चुकी थी। सभी मित्रों और प्रधानाचार्य ने भी गोपाल की सूझबूझ और हिम्मत की प्रशंसा की। देश के प्रधानमन्त्री ने गणतन्त्र दिवस पर गोपाल को वर्ष 2004 का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

दिमागी कसरत

इस पहेलीनुमा कहानी में कुछ रिक्त स्थान हैं जिनमें ऐसे शब्द भरने हैं जिनका प्रारम्भ 'उप' से होता हो।

हमारे शहर के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रभाकर जी जिनका .... 'बैचेन' है, उन्होंने 2 वर्ष तक मेहनत करके 300 पेज का एक .... लिखा। हिंदी दिवस के .... में इस पुस्तक का लोकार्पण रखा गया। यह किताब प्रसिद्ध फिल्म .... के अभिनेता एवं निदेशक मनोज कुमार को समर्पित की गई। कार्यक्रम में शहर के सभी प्रमुख साहित्यकार .... थे।

पुस्तक का लोकार्पण करते हुए मुख्य अतिथि ने इस पुस्तक को लेखक की एक प्रमुख .... बताया। उन्होंने कहा कि आज समाज में अनेक विसंगतियाँ हैं जिनका सही .... साहित्यकार ही कर सकता है। साहित्यकार को दूसरों को .... देने से बचना चाहिए। उसे अपनी कथनी और करनी में समानता रखनी होगी। आपने बताया कि साहित्य एवं संस्कृति की दृष्टि से यह शहर एक .... भूमि है।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में मुख्य अतिथि को .... ओढ़ाकर स्वागत किया गया। उन्हें .... स्वरूप साहित्य भेंट किया गया। मुख्य कार्यक्रम के .... कवि गोष्ठी का आयोजन रखा गया।

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

चाचा नेहरू की याद में बनी फिल्म

नौनिहाल

बात जब बच्चों के सिनेमा की आती है तब हमारे सामने एक फ़िल्म आती है **'नौनिहाल'** जिसकी कहानी सावन कुमार ने लिखी थी। राज मारब्रोस द्वारा निर्देशित 'नौनिहाल' के मुख्य कलाकारों में बलराज साहनी, संजीव कुमार, इंद्राणी मुखर्जी और मास्टर बबलू शामिल थे।

इस फिल्म की कहानी में एक अनाथ बच्चा राजू है। जब उसके सभी दोस्तों से मिलने उनके माँ–बाप या कोई रिश्तेदार आते हैं तो वह इस बात से परेशान हो जाता है कि उससे मिलने कोई क्यों नहीं आता है? इसलिए वह जरा–जरा सी बात पर झगड़ पड़ता है। इस समस्या के समाधान के लिए उसके स्कूल के प्रिंसिपल एक बार उसे चाचा नेहरू की तस्वीर दिखाकर यह बताते हैं कि यही उसके चाचा हैं। वह बहुत खुश हो जाता है। उसे यह भी बताया जाता है कि उसके चाचा दिल्ली में रहते हैं। यह जानकर वह भी दिल्ली जाना चाहता है ताकि चाचा से मिल सके।

स्कूल की छुट्टियाँ हो जाती है और सभी बच्चे अपने–अपने घर जा रहे होते हैं। ऐसे में वह सबकी नजरें बचाकर अपने एक दोस्त को लेने आई कार की डिक्की में बैठकर मुम्बई पहुँच जाता है और बाद में गलत हाथों में पड़ जाता है। उसके बाद वह किसी तरह दिल्ली भी पहुँच जाता है। वहाँ वह एक कार के आगे गिर कर बेहोश हो जाता है और संयोग से कार में बैठा सज्जन उसे जानता है। वह उसके स्कूल सूचना भेजता है। फिर एक दिन वह भी चाचा नेहरू की तरह सफेद कुर्ते पर एक गुलाब का फूल लगाकर तैयार हो जाता है क्योंकि आज उसे चाचा नेहरू से मिलने जाना है। इसी बीच चाचा नेहरू के देहांत की खबर आती है और राजू का अरमान पूरा नहीं हो पाता।

'नौनिहाल' से हम यह समझ सकते हैं कि बच्चे कच्चे घड़े के समान होते हैं और उन्हें हम जैसा चाहें, जिस रूप में ढाल सकते हैं। इसके साथ ही इस फिल्म से यह भी सबक मिलता है कि किसी भी बच्चे का मजाक नहीं उड़ाया जाना चाहिए। साथ ही उसे ऐसा कोई भी आश्वासन नहीं दिया जाना चाहिए जिससे वह कोई भ्रम पाल ले और उसी में खोया रहे। बच्चों की कोमल भावनाओं का हमें हर परिस्थिति में सम्मान भी करना चाहिए।

'नौनिहाल' फिल्म के अन्त में हमारे देश के प्रथम प्रधानमन्त्री और बच्चों के चाचा पंडित जवाहरलाल नेहरू जी की अन्तिम यात्रा के दृश्य दिखाते हुए एक गीत भी चलता है। इस गीत को कैफी आज़मी ने लिखा और मदन मोहन ने इसका संगीत तैयार किया। गायक मोहम्मद रफी का गाया यह गीत सुनते हुए आज भी आँखें नम हो जाती हैं :–

मेरी आवाज सुनो, प्यार का राज सुनो
मैंने एक फूल जो सीने पे सजा रखा था,
उसके परदे में तुम्हें दिल से लगा रखा था
था जुदा सबसे मेरे इश्क का अन्दाज सुनो।

.

मुकेश पोपली
बीकानेर (राजस्थान)

कहानी

खुशी के आँसू

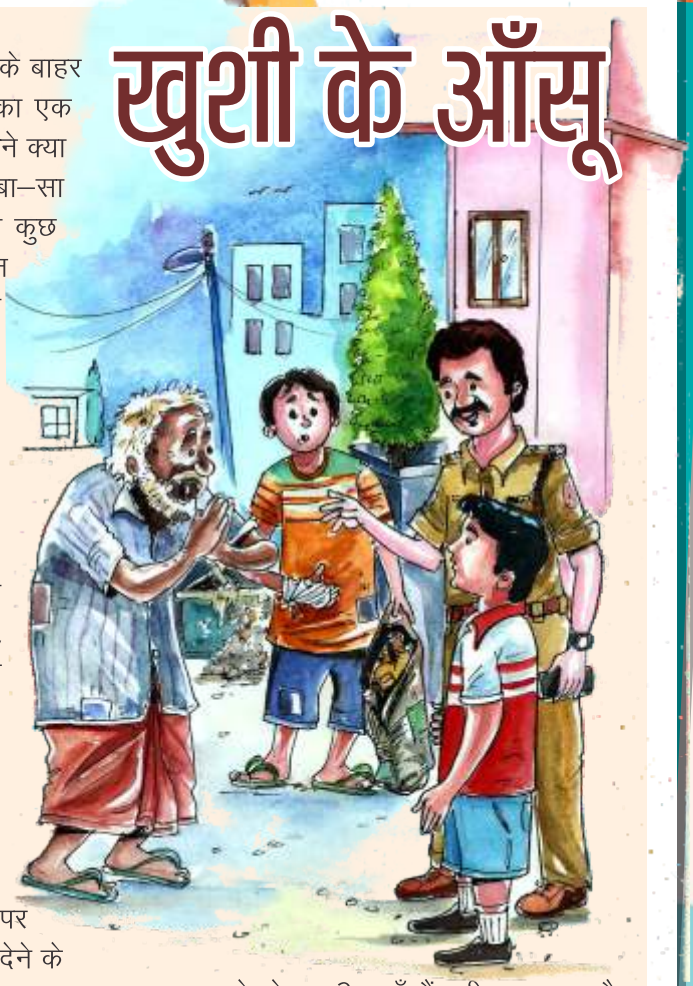

बारह वर्षीय हिमांशु जब घर के बाहर जाता तो वह देखता कि उसी की उम्र का एक लड़का, कूड़े– कचरे के ढेर के पास न जाने क्या करता रहता था? उसके एक हाथ में लम्बा–सा थैला होता था जिसमें वह कूड़े–कचरे से कुछ चीजें उठाकर रखता जाता था। एक दिन हिमांशु ने अपनी माँ को यह बात बताई तो उन्होंने यह कहकर टाल दिया कि वह कोई लावारिस बच्चा होगा। उसके बारे में तुम्हें ज्यादा नहीं सोचना चाहिए। परन्तु हिमांशु के मन को इससे सन्तोष नहीं हुआ। उसको गरीब बच्चे पर तरस आ रहा था।

एक दिन हिमांशु ने हिम्मत करके उस लड़के को आवाज दी– ''भैया, यहाँ आओ।'' मोहल्ले के सभी बच्चे जानते थे कि हिमांशु दरोगा का बेटा है। शायद वह लड़का भी जान गया होगा। इसीलिए हिमांशु के आवाज देने पर वह उसके पास आने के बजाय अपना थैला लेकर भाग खड़ा हुआ।

अगले दिन वह फिर कूड़े के ढेर पर आ गया। इस बार हिमांशु ने उसे आवाज देने के बजाय सीधे उसके पास जाकर प्यार से कहा– ''सुनो, तुम्हारा नाम क्या है?'' उसने सहमते हुए उत्तर दिया– ''मेरा नाम रामू है।''

''तुम यहाँ क्या करते रहते हो?'' –हिमांशु ने पूछा। रामू ने बताया कि वह सफाई मजदूर के आने से पहले ही यहाँ रोज कूड़े से रद्दी चीजें तलाशता है और फिर उन्हें बेचकर अपने माता–पिता को घर के सामान के लिए पैसे देता है। हिमांशु ने पूछा– ''तुम्हारा पढ़ने का मन नहीं होता क्या?'' लड़के ने कहा– ''मन तो होता है पढ़ने का, खेलने का, पर हमें मौका कहाँ है? कौन पढ़ाएगा हमें?''

हिमांशु ने पूछा– ''दोस्ती करोगे हमसे?'' रामू ने हिचकिचाकर कहा– ''क्यों मजाक करते हो साब? कहाँ मैं गरीब लड़का और कहाँ आप, दरोगा साहब के बेटे। अब तो कूड़े से रद्दी छाँटकर बेचना ही हमारा धन्धा बन गया है।''

हिमांशु को उस पर बड़ा तरस आ रहा था, पर बेचारा क्या करता? एक दिन उसने अपने पिताजी से उस लड़के के बारे में कहा और उसकी मदद करने की सिफारिश की तो दरोगा जी बोले– ''इन दिनों तो हम एक बड़े अपराधी की तलाश में लगे हुए हैं। फिर कभी देखेंगे।''

तभी एक दिन रविवार की सुबह हिमांशु, उसके पिताजी व माताजी बाहर लॉन में बैठे थे। सभी ठंडी हवा में धूप का मजा ले रहे थे। ठीक उसी समय वही गरीब लड़का रामू आकर कूड़े के ढेर पर काम करने लगा। हिमांशु ने

इशारे से अपने पिताजी को उसके बारे में बताया। दरोगा साहब की निगाह उस पर पड़ी। किन्तु अचानक यह क्या? वह लड़का रामू तो एकदम औंधे मुँह गिर पड़ा और तड़पने लगा।

दरोगा जी के साथ हिमांशु तथा मोहल्ले के और लोग भी उधर ही दौड़ पड़े। देखते ही देखते भीड़ लग गई। दरोगा जी ने देखा तो पता चला कि रामू कूड़े से काँच के टुकड़े निकाल रहा था कि कोई नुकीला टुकड़ा उसके हाथ में गहरा घुस गया। खून की धार बह चली। खून रुकता ही न था। दरोगा जी ने फोन करके एक डॉक्टर को बुलवाया।

बड़ी मुश्किल से उसके शरीर से खून निकलना बन्द हुआ। दरोगा जी ने अपने लॉन के बरामदे में उसे लिटाया। किसी को भेजकर उसके पिता को बुलवाया गया। वह एक वृद्ध, बेसहारा आदमी था। आते ही वृद्ध अपने बेटे से लिपटकर रोने लगा। हिमांशु से यह सब देखा नहीं जा रहा था। वह बार–बार रामू से उसकी तबीयत का हाल पूछ रहा था।

दरोगा जी ने वृद्ध से पूछा– ''तुम इससे रद्दी इकट्ठा करने व बेचने का काम क्यों कराते हो? आज अगर यहाँ हम लोग न होते तो ज्यादा खून निकल जाने से यह मर जाता।''

वृद्ध बोला– ''हुजूर, बहुत बूढ़ा और गरीब आदमी हूँ मैं! घर पर बुढ़िया भी है। पापी पेट के लिए बेटे से यह सब काम कराना पड़ता है।'' दरोगा ने पूछा– ''घर पर और कौन–कौन है?'' वृद्ध ने बताया– ''हुजूर, दो और लड़के हैं जो बचपन से ही बाहर काम करते–करते बड़े हुए हैं।''

''वे कहाँ हैं?'' दरोगा जी ने पूछा। हुजूर एक तो काँच के कारखाने में है और दूसरा कालीन बुनने के कारखाने में काम करता है।'' – वृद्ध ने जवाब दिया। दरोगा जी ने डपटकर कहा– ''तुमने बहुत गलत काम किया। तुम्हें खुद मेहनत करके तीनों बच्चों को पढ़ाना चाहिए था।'' वह बोला– ''मुझ बूढ़े को तो पक्की मजदूरी भी नहीं मिलती जो बच्चों को पढ़ाता।'' दरोगा जी फिर तेज स्वर में बोले– ''दिल पक्का करके कोई हल्का–फुल्का काम करो और बच्चे को पढ़ाओ, समझे! बच्चों से जोखिम भरा काम कराना जुर्म है।'' वृद्ध डर गया। उसने गिड़गिड़ाकर कहा– ''हुजूर, आपकी शरण में हूँ। आप ही कोई रास्ता बताइए, काम दिलाइए।''

दरोगा जी के मित्र अग्रवाल साहब ने कई साल पहले एक पब्लिक स्कूल खोला था जो इन दिनों काफी अच्छा चल रहा था। दरोगा जी ने उन्हें फोन करके गरीब वृद्ध और उसके बारे में बात की तो वे मान गए। उन्होंने फोन पर कहा– ''उस आदमी को भेज दीजिए, उसे पानी पिलाने के काम पर रख लूँगा। उसके बेटे रामू की पढ़ाई का इन्तजाम भी यहीं हो जाएगा।''

दरोगा जी ने सारी बातें उसे बताई तो वह उनके पैरों पर गिर पड़ा। उन्होंने इलाज के लिए रुपए देकर उसको और रामू को रिक्शे पर घर भेज दिया। हिमांशु की आँखों में खुशी के आँसू थे उसने भी रामू को प्यार से विदा किया। उसे पापा के अच्छे व्यवहार से बहुत खुशी हुई।

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना
हरदोई (उत्तर प्रदेश)

आओ पढ़ें : नई किताबें

पुस्तक :
घोड़ा उड़ता पंख पसारे

लेखक :
श्यामपलट पांडेय

मूल्य : 200 रुपए

पृष्ठ : 88

संस्करण– 2023

प्रकाशक :
अविचल प्रकाशन, हल्द्वानी(उत्तराखंड)

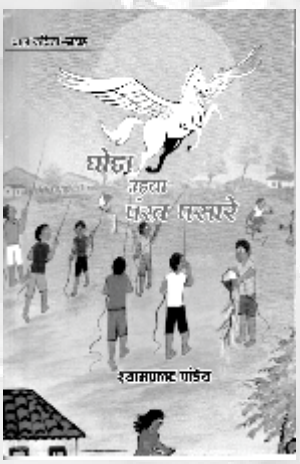

वर्ग पहेली

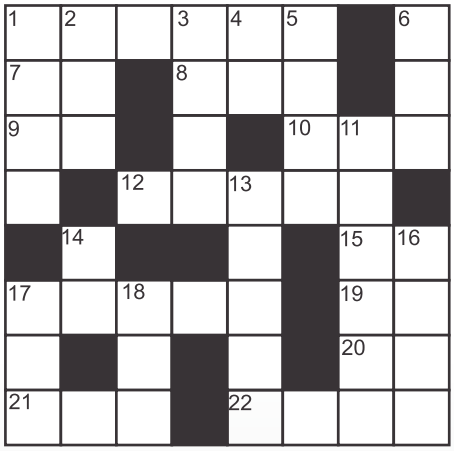

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ :

1. होली जलाने की क्रिया (3, 3)
7. भोलेनाथ, शंकर, महादेव (2)
8. एक रोग, किसी अंग का काम नहीं करना (3)
9. दोस्त, सखा, मित्र (2)
10. शक्कर का पकाया हुआ घोल (3)
12. विरोध करने वाला व्यक्ति (5)
15. चिपचिपा (2)
17. नव वर्ष, विक्रम संवत का पहला दिन (2, 3)
19. अंधा, एक कृष्ण भक्त कवि (2)
20. आवाज, नाद (2)
21. एकाग्र होकर कार्य करना (3)
22. एक शांतिदूत पक्षी (4)

ऊपर से नीचे :

1. चतुर, बुद्धिमान, अक्लमंद (4)
2. यकृत, जिगर (3)
3. समूह का नायक (4)
4. अधिकार (2)
5. नये प्रयोग करना (4)
6. कथा, स्टोरी अँग्रेजी में (3)
10. 2X2, गिनती का चौथा अंक (2)
11. चेहरा, मोहरा (3, 3)
13. विशिष्ट कार्य के लिए अतिरिक्त पद (5)
14. समय बताने वाला यंत्र (2)
16. तालाब (4)
17. रंगीन पाउडर जिससे होली खेलते हैं (3)
18. वस्त्र या आभूषण धारण करना (3)

उत्तर इसी अंक में

कबीर वाणी...

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो मन देखा आपना, मुझ से बुरा न कोय ॥

कबीर दास जी कहते हैं कि मैं सारा जीवन दूसरों की बुराइयाँ देखने में लगा रहा लेकिन जब मैंने खुद अपने मन में झाँक कर देखा तो पाया मुझसे बुरा कोई इनसान नहीं है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि दूसरों में बुराई ढूँढने की बजाय हमें अपनी बुराइयों को देख कर उन्हें सुधारने का प्रयास करना चाहिए।

(1) ब्रह्मांड से सम्बन्धित इन चित्रों को पहचानिये?

(2) सबसे बड़ा और सबसे छोटा ग्रह कौनसा है?

(3) सर्वाधिक उपग्रह वाला ग्रह कौनसा है?

(4) किस ग्रह को 'नीला ग्रह' कहा जाता है?

(5) चन्द्रमा कितने दिन में पृथ्वी का एक चक्कर लगाता है?

(6) पृथ्वी का निकटतम ग्रह कौनसा है?

(7) तारों के विभिन्न रंग किस कारण से होते हैं?

(8) हमारी आकाश गंगा के केन्द्र के चारों ओर घूमने में सूर्य को कितना समय लगता है?

(9) ब्लेक होल का सिद्धांत किसने प्रस्तुत किया?

(10) अन्तरराष्ट्रीय सूर्य दिवस कब मनाया जाता है।

उत्तर इसी अंक में

जरा हँस लो

- पति : कहाँ जा रही हो?
  पत्नी : विमला के यहाँ।
  पति : कल तो उससे झगड़ा कर आई हो, फिर आज क्यों जा रही हो?
  पत्नी : कल तो सेमीफाइनल था, आज फाइनल है।

- अध्यापक ने कक्षा में पूछा – सीनियर और जूनियर में क्या अन्तर है?
  एडमिन ने हाथ खड़ा किया...
  शिक्षक ने कहा – शाब्बास बेटा, बताओ।
  एडमिन – सर, जो समुद्र के पास रहता हो वो सीनियर (sea near) और जो चिड़ियाघर के पास रहता हो वो जूनियर (zoo near)!

नाटिका

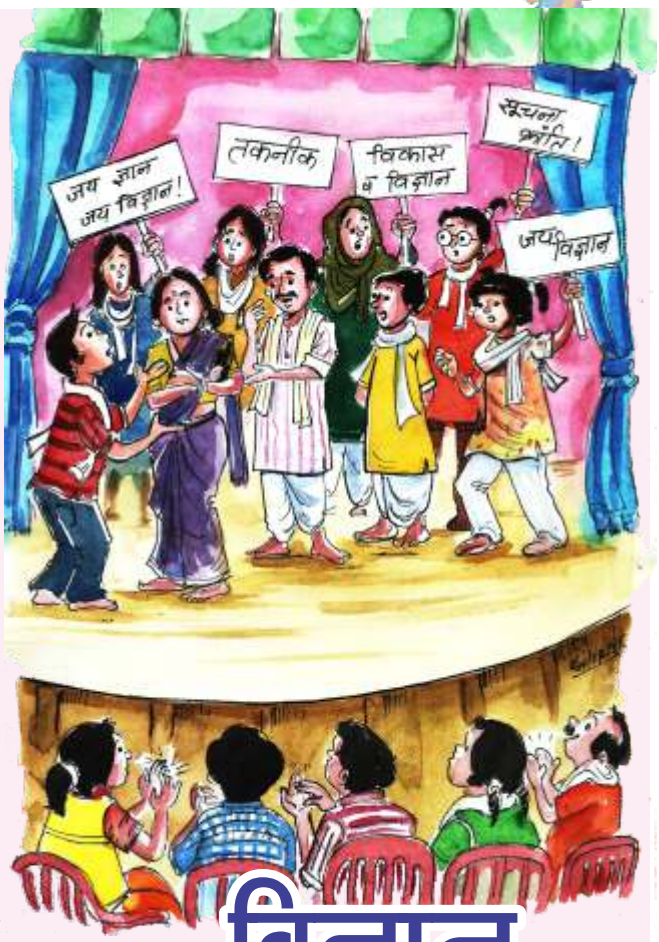

विज्ञान ही जिन्दगी बनाएगा

पात्र : सूत्रधार (15 वर्षीय बालिका), राजू, राजू की माँ– यशोदा, राजू के पिता– मोहन, महिलाएँ (सिमरन व बिमला), लड़कियाँ (मोनिका, कोमल, महक)

(पहला दृश्य)

(मंच पर कलाकारों का प्रवेश एक गीत–अभिनय से होता है। उनके हाथों में तख्तियाँ हैं। तख्तियों में 'जय ज्ञान', 'जय विज्ञान', 'तकनीक', 'विकास व विज्ञान', 'सूचना क्रांति' लिखा हुआ है।)

कोरस : सीखो दोस्तो सीखो। सीखो दोस्तो सीखो। विज्ञान से, विज्ञान से, विज्ञान से। विज्ञान से शुरुआत करो। अगुवा तुम्हें जो है बनना। विज्ञान से, विज्ञान से, विज्ञान से...।

(एक महिला सिमरन का प्रवेश)

सिमरन : बन्द करो ये विज्ञान का गुण गान।

मोनिका : (उसके पास जाकर) क्यों बहना? क्या है कहना? तुम्हें किस बात से है परेशानी?

सिमरन : अरे! क्या विज्ञान? कैसा विज्ञान? (तभी उसका मोबाइल बज उठता है) एक मिनट। ये मोबाइल भी न? इस मोबाइल ने भी आदमी का जीना हराम कर रखा है। (फोन पर बात करने लगती है) हैलो। अरे! हाँ। हूँ। ठीक। ठीक है। ठीक है। अभी भेजती हूँ। बीस हजार न? चलो ठीक है।

मोनिका : मैं पूछ रही थी कि विज्ञान के बारे में क्या कह रही हैं आप?

सिमरन : वो बाद में। पहले अपने बेटे को बीस हजार रुपए भेज दूँ।

कोमल : वही जो ए.आई. की पढ़ाई कर रहा है।

सिमरन : हाँ, हाँ, वही। ये लो मेरा मोबाइल। पासवर्ड 1960 है।

मोनिका : बेटे का मोबाइल नम्बर किस नाम से है?

सिमरन : आरटीफेशियल इंगलिशजेंट्स।

कोमल : अरे! आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस! ये लो। हो गया। वैसे एक बात कहूँ। ऐसे किसी को भी अपना लेन–देन का पासवर्ड नहीं बताते।

सिमरन : मजबूरी है। एक तो इस उम्र में यह नई–नई चीजें कहाँ सीखी जाती हैं?

मोनिका : तो मैडम जी यह विज्ञान की ही देन है। सोचिए! यह मोबाइल न होता तो क्या आप पलक झपकते अपने बेटे को बंगलुरु रुपए भेज पाती? नहीं न?

सिमरन : हाँ यह तो है। पर बेटी। हर कोई इसी पे चिपका है। यह तो गलत है न!

मोनिका : जी। चाकू का उपयोग आप सब्जी काटने में करते हैं या किसी का गला काटने में, यह आपके विवेक पर निर्भर करता है ना।

(महक का प्रवेश। जेब से एक छोटा बैनर निकालती है जिसमें लिखा होता है–विज्ञान अपनाओ। विज्ञान दोहराओ। कोरस गीत दोहराती है– विज्ञान अपनाओ। विज्ञान दोहराओ और वैज्ञानिक नजरिया अपनाओ।)

(दूसरा दृश्य)

(राजू पालथी मारकर बैठा है। कॉपी पर काम कर रहा है। किताब बन्द है। हाथ में मोबाइल है। उसे बार–बार क्लिक कर रहा है, फिर कुछ लिख रहा है। उसकी दीदी उसे घूरती है और फिर स्कूल चली जाती है।)

मोहन : बेटा! आज स्कूल नहीं जा रहे हो?

राजू : बहुत सारा होमवर्क मिला है। आज निपटाना है। वैसे भी आज शनिवार है।

यशोदा : आँगन में कपड़े रखे हैं। उन्हें छत पर सुखाने के लिए रख आ।

राजू : माँ! मैंने होमवर्क निपटाने के लिए तो छुट्टी ली है। बहुत काम है।

यशोदा : चल मैं ही चली जाती हूँ। गैस पर दूध रखा है। आँच कम है। फिर भी तीन मिनट बाद गैस बन्द कर देना। याद से। *(राजू हाँ में सिर हिलाता है। उसकी माँ बाहर चली जाती है। राजू पलट कर मोबाइल पर गेम खेलने लग जाता है। थोड़ी देर बाद उसकी माँ लौटती है।)*

यशोदा : (नाक में गंध आने पर बुरा–सा मुँह बनाती है) हाय राम! दूध जल रहा है और तू बेखबर मोबाइल से चिपका है। (दौड़ती हुई जाती है। तभी सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार : देखा आपने। भैया जी होमवर्क में इतने मगन हैं कि न कुछ दिखाई दे रहा है, न सुनाई दे रहा है। क्या वाकई होमवर्क ही कर रहे हैं?

(राजू के पिता मोहन ऑफिस से लौटते हुए। उसकी बड़ी बहन भी स्कूल से लौट रही है। राजू काम पर जुटा हुआ है।)

मोहन : (राजू से) सुबह से शाम हो गई। तुम्हारा होमवर्क नहीं निपटा? यह किताब तो ज्यों की त्यों पड़ी है।

राजू : किताब देखने की जरूरत ही नहीं है। सब मोबाइल पर है। एआई से पूछो। चैट जीपीटी से पूछो। सब तैयार मिलता है।

सूत्रधार : अंकलजी! क्या इसके सारे दोस्त भी स्कूल नहीं गए? आज तो हर जगह मासिक परीक्षा थी।

यशोदा : सुबह से बेचारा काम पर लगा है।

सूत्रधार : (राजू के हाथ से मोबाइल ले लेती है। चैक करती है।) आज के 13 घंटे का स्टेटस। साढ़े छह बजे मोबाइल की स्क्रीन ऑन हुई है। गूगल सर्च : दो घंटे। व्हाट्सएप–आधा घंटा। फेसबुक–तीन घंटा। इंस्टाग्राम– चार घंटा। एआई– आधा घंटा। फोन कॉल–आधा घंटा। वीडियो गेम्स ढाई घंटा।

मोहन : कॉपी दिखाना। (कॉपी देखते हुए) आज आठ मार्च है। कल सात मार्च को टीचर ने कॉपी जाँची है। उसके बाद तो एक पेज काम किया हुआ है। यानी सुबह से एक पेज काम किया है?

राजू : मोबाइल से पढ़ाई भी तो की है।

सूत्रधार : देखा आपने! मोबाइल हमारी सुविधा के लिए है। लेकिन हम इसके गुलाम बन जाएँ तो क्या यह ठीक है? सोचिए।

कोरस : विज्ञान के आविष्कार। ये हैं प्यारे उपहार। इनका इस्तेमाल, करे कमाल। बस करो तरीके से इनका इस्तेमाल।

(तीसरा दृश्य)

सूत्रधार : तो देखा आपने। ये मोबाइल आज किसके पास नहीं है? यह आज की जरूरत है।

(तभी कोई वहाँ से परेशानी और भय से तेज कदमों से जाता है।)

सूत्रधार : क्या हुआ? कोई परेशानी।

महिला : मैं बिमला हूँ। मेरी बेटी बंगलुरु में पढ़ती है। उसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। बैंक जाकर कुछ रुपए निकालने हैं। एक घंटे के भीतर उसे भेजने हैं।

सूत्रधार : एक मिनट। पुलिस भला रुपए क्यों माँगेगी? और तुम्हें पता भी है कि यहाँ से बंगलुरु कितने किलोमीटर है? 2000 किलोमीटर !

बिमला : उन्होंने मेरी बेटी की आवाज भी सुनाई थी। वह रो रही थी।

सूत्रधार : आजकल साइबर क्राइम बढ़ रहा है। फर्जी गिरफ्तारी दिखाई जाती है। वीडियो कॉल करने वाला पुलिस की वर्दी में होता है। वह पहले आपकी, आपके घर की, आपके बच्चों की जानकारी जुटाते हैं। तब फोन करते हैं। इसे 'घोस्ट अरेस्टिंग' कहते हैं। एक मिनट रुको। मैं अभी यहीं से एस.एस.पी. से बात करवाती हूँ। चलो। चलते–चलते बात करते हैं।

(दोनों जाते हैं।)

कोरस : रहो होशियार! खबरदार! बनो जानकार।

सूत्रधार : इंटरनेट के सहारे कई झूठे काम हो रहे हैं। बिमला की बेटी पढ़ाई कर रही है। कोई गिरफ्तारी नहीं हुई थी। फर्जी कॉल पर विश्वास न करें। घबराएं नहीं, अपनी निजी और गोपनीय सूचना न दें।

(चौथा दृश्य)

सूत्रधार : (दर्शकों से) इंटरनेट ने हमारा काम सरल कर दिया है। गूगल मैप ने हमारी यात्रा आसान कर दी है। है न कमाल! मगर इन्टरनेट का उपयोग सावधानी से करें। इसमें अनेक खतरे भी हैं। जिनसे हमें सचेत रहना होगा।

बिमला : तो आपका मतलब है कि हम इंटरनेट का उपयोग नहीं करें?

सूत्रधार : ऐसा मैंने कब कहा? इंटरनेट के बिना अब हम नहीं रह सकते। मोबाइल में ही बैंक समा गया है। मोबाइल से टिकट बुक करो। मोबाइल से ही आनलाइन कुछ भी मँगा लो।

महक : अरे! गूगल से ए.आई. से आप सब कुछ कर लो। लेकिन मोबाइल रसोई की तरह मोबाइल में ताजा, गरमा–गरम रोटी तो नहीं भेज सकता न?

सूत्रधार : वही तो मैं कह रही हूँ। ए. आई. या गूगल या मीडिया या इंटरनेट हमारी सहूलियत के लिए है। हम इस पर पूरी तरह से निर्भर हो जाएँ तो गलत है।

कोमल : सही बात है। आपका मोबाइल आपको अलार्म से जगा सकता है। लेकिन सूर्योदय देखना है तो बिस्तर छोड़कर बाहर तो जाना ही होगा।

महक : और हाँ! ए.आई. से पूछकर आप बहुत सारी जानकारी जुटा सकते हैं लेकिन उसे पढ़ने–लिखने के लिए आपको खुद मेहनत करनी होगी।

सूत्रधार : तो दोस्तो! सौ टके की बात यही है कि सोचो, समझो, जानो और अपने विवेक का इस्तेमाल करो। सतर्क रहो और सुरक्षित रहो। इंटरनेट हमारी मदद के लिए है। लेकिन कोई इसका फायदा उठाकर हमें ठग ले, यह नहीं होना चाहिए। सब एक साथ : जय सूचना तकनीक, जय जागरुकता।

मनोहर चमोली 'मनु'
पौड़ी (उत्तराखंड)

कविता

सयानी धूप!

सुबह-सुबह आ बालकनी में,
कहने लगी कहानी धूप।

वहाँ गाँव में, खड़े खेत में,
गेहूँ खूब पकाया था।
बादल था तैयार बरसने,
उसको भी धमकाया था।
गणित भूख का समझाया तो,
मुझको लगी सयानी धूप।

आओ, पास हमारे बैठो,
अच्छी बात बताती हूँ।
कमी विटामिन डी की पूरी,
होगी मैं समझाती हूँ।
अस्पताल की सिस्टर जैसी,
हमको लगी सुहानी धूप।

बोली फूलों को हँसना भी,
मैं ही तो सिखलाती हूँ।
दुनिया को दिन होने का भी,
मैं ही भान कराती हूँ।
अब तो लगने लगा कसम से,
है ये सबकी नानी धूप।।

डॉ. आर. पी. सारस्वत
सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

जल के बिना...

कक्षा में शिक्षक समझाते,
जल के भारी लाभ बताते।
अहम रोल जल का जीवन में,
जल के बिना न जीवन पाते।।

प्यास लगे तो पीते जल हैं,
बहती नदियाँ कल-कल-कल हैं।
पानी है अनमोल सभी को,
इसके बिना न जीते पल हैं।।

जल से ही हम फसल उगाएँ।
तभी अन्न से रोटी पाएँ।
बाग-बगीचे सींचें जल से,
तब ही मीठे फल सब खाएँ।।

जल से बिजली भी बनती है,
हर घर को रोशन करती है।
बिजली से सब चलें मशीनें,
उत्पादन ये ही करती हैं।।

व्यर्थ न इसको कभी बहाएँ,
बूँद-बूँद को सभी बचाएँ।
अगर न चेते अभी लोग तो,
तरस-तरस हम जल जाएँ।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती (उत्तर प्रदेश)

कहानी

चिंटू का वीडियो गेम

बाहर पापा ने कार का हॉर्न बजाया पीं...पीं! और दादाजी कार से उतरे। इस बार दादाजी पूरे छः महीने बाद कानपुर से आए थे। दादाजी, दादाजी कहकर भाग कर आने वाला आठ साल का चिंटू आज नदारद था। चिंटू को खोजती दादाजी की नजरों को देखकर मम्मी ने आवाज लगाई– ''चिंटू, चिंटू! देखो, दादाजी आए हैं।'' फिर भी चिंटू नहीं आया। मम्मी एक बार फिर जोर से ''चिंटू'' कहने ही वाली थीं कि दादाजी ने हाथ से इशारा करते हुए रोका– ''आ जाएगा, आ जाएगा, अभी कुछ कर रहा होगा।''

पर बात इतनी ही नहीं थी। हाथ–मुँह धोने के बाद भी चिंटू नजर नहीं आया। चाय के समय मम्मी ने बुलाया तो अपना मोबाइल लिए हुए आया। उसने दादाजी को ठीक से देखा भी नहीं और मोबाइल में ही लगा रहा। मम्मी ने फिर कहा– ''पैर तो छुओ दादाजी के।'' पर चिंटू हिला भी नहीं। वो वहीं बैठा था पर थोड़ी–थोड़ी देर में खुद ही चिल्लाता जा रहा था– ''बचाओ, बचाओ, ये मारा... ये जीत गया... वो...।''

अब मम्मी से नहीं रहा गया। उन्होंने चिंटू के हाथ से मोबाइल छीनते हुए कहा– ''जाओ, दादाजी के पैर छुओ।''

''नहीं छूने मुझे पैर–वैर, आपने मेरा गेम खराब कर दिया।'' कहते हुए चिंटू मम्मी के हाथ से मोबाइल छीनकर पैर पटकते हुए वापस चला गया। मम्मी की आँखों में आँसू भर आए। वो दादाजी से भर्राये गले में बोलीं– ''देखिए ना पिताजी, क्या हो गया है चिंटू को, हर समय वीडियो गेम खेलता रहता है। कोरोना के समय में इसे मोबाइल मँगा कर दिया था। एक तो पढ़ाई के लिए और दूसरे उस समय बच्चे कहीं बाहर खेलने नहीं जा सकते थे। पर मोबाइल आते ही इसे वीडियो गेम की ऐसी आदत पड़ी कि खाना–पीना, हँसना–रोना सब वही हो गया।

''तो क्या तुमने उसे रोकने की कोशिश नहीं की, नम्रता?'' दादाजी ने प्रश्न पूछा। इस बार उत्तर पापा ने दिया– ''क्या–क्या नहीं किया पिताजी, डाँटा, मारा, समझाया, मोबाइल छीना पर वही ढाक के तीन पात। इतनी जोर–जोर से रोना

शुरू कर देता है कि देना पड़ता है, फिर वही सब कुछ।'' बच्चों को मारने के दादाजी सख्त खिलाफ रहे हैं। मारने की बात सुनकर वे तुरन्त बोले– ''मारा! फिर वही बात, कितनी बार कहा है बेटा, बच्चों को यूँ डाँटना–मारना तो बिलकुल भी ठीक नहीं है। फिर ये तो कम्प्यूटर–मोबाइल के जमाने के बच्चे हैं। ये ऐसे ही किसी बात को थोड़े ही मान लेंगे।'' दादाजी ने पापा की तरफ देख कर कहा।

''पिताजी, यही तो दिक्कत है नए जमाने के बच्चों की। हमारी तरह नहीं, कि समझाने से समझ जाएँ। अब इनका माँ–बाप भी गूगल हो गया है।'' पापा ने दादाजी को सौंफ देते हुए कहा। ''अब टेक्नॉलॉजी इतनी भी बुरी चीज नहीं है बेटा। अगर समस्या टेक्नॉलॉजी की वजह से है तो उसका निदान भी उसी के पास है।'' सौंफ चबाते हुए दादाजी ने कहा। ''तो फिर अब आप ही सँभालिए पिताजी, आप तो टीचर रहे हैं, आपको बच्चों के मन की ज्यादा जानकारी है।'' मम्मी–पापा दोनों ने ही लगभग साथ–साथ अपने दिल की बात कह दी। लेकिन अब उन्हें अपने ही घर में एक नई चुनौती का सामना करना था।

खाने की टेबल पर जब काफी ना–नुकूर करने के बाद चिंटू आया तो उसने देखा कि दादाजी उसका इन्तजार कर रहे हैं। रोज शाम 7 बजे खाना खाने वाले दादाजी 10 बजे तक उसकी वजह से जाग रहे हैं, ये जान कर उसे अच्छा नहीं लगा। खाने के लिए बैठते ही दादाजी ने प्रश्न किया– ''क्या कर रहे थे बेटा?'' ''गेम खेल रहा था।'' चिंटू ने मुँह बिचकाते हुए कहा। उसे उम्मीद थी कि दादाजी उसे एक लम्बा–सा लेक्चर सुनाएँगे या कल उसका मोबाइल छीन लेंगे। पर उसकी आशा के विपरीत दादाजी ने कहा– ''अरे वाह, ये तो बड़ा मजेदार होता है। मैंने कभी खेला नहीं है, पर सुना जरूर है। क्या तुम मुझे इसे खेलना सिखाओगे?'' आशा के विपरीत उत्तर पाकर चिंटू की तो खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। उसने आँखों में चमक लाते हुए कहा– ''बिलकुल दादाजी बिलकुल!'' ''तो फिर अपनी दोस्ती पक्की।'' दादाजी ने हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा।

रात को दादाजी को चिंटू के साथ उसी के कमरे में सोना था। देर तक वे उससे वीडियो गेम सीखते रहे। चिंटू को बहुत मजा आ रहा था। वो भी दादाजी को पूरे उत्साह से सिखा रहा था। ''ऐसे नहीं, दादाजी ऐसे, यहाँ से तो आप पॉइंट लूज कर देंगे, पहले इसे, पहले इसे।'' की आवाजों से कमरा गूँजने लगा।

जब मम्मी स्कूल के लिए सुबह चिंटू को उठाने आईं तो देखा सारा कमरा बिखरा हुआ है।... और तो और सुबह 5 बजे उठने वाले दादाजी भी अभी तक सो रहे थे। मम्मी की आवाज पर दोनों हड़बड़ा कर उठे। तीन दिन में चिंटू और दादाजी वीडियो गेम के पार्टनर बन गए। गेम खेलना हो या उसकी रणनीति बनानी हो, सुबह से देर रात तक वही बातें। मम्मी ने तो सिर पकड़ लिया। वह पति से कहने लगीं– ''कहाँ हम चिंटू को सुधारने के लिए पिताजी की तरफ उम्मीद से देख रहे थे और कहाँ ये खुद ही बिगड़ गए।'' ''तुम्हारी ही योजना थी कि पिताजी आ जाएँगे तो चिंटू सुधर जाएगा। अब भुगतो।'' पापा ने हँसते हुए कहा।

रात के खाने के समय दादाजी ने चिंटू से कहा– ''मैं अपने ऑनलाइन वाले स्टूडेंट्स को भी वीडियो गेम खिलाना चाहता हूँ। हम पहले उन्हें बताएँगे कि इसके क्या–क्या फायदे हैं, क्यों चिंटू।'' ''बिलकुल दादाजी।'' चिंटू ने खुशी से चहकते हुए कहा। ''तो फिर चिंटू, तुम आज गूगल पर ढूँढ़ कर बताओ कि इसके क्या फायदे हैं? समझो यही तुम्हारा प्रोजेक्ट है।'' ''जी दादाजी!'' कहते हुए चिंटू खाना खत्म होने का इन्तजार करने लगा।

दूसरे दिन उसका प्रोजेक्ट तैयार था। उसने कई साइट्स से ढूँढ़–ढूँढ़ कर उसके कई फायदे लिखे थे। दादाजी ने उसका प्रोजेक्ट देखते हुए उसे खुशी से जोरदार शाबाशी दी।

दादाजी ने सोने से पहले सारे पॉइंट्स टाइप कर चिंटू से कहा– ''अब कल ही इन्हें अपने स्टूडेंट्स के साथ साझा करूँगा। बड़ा मजा आएगा, सब बच्चे खेलेंगे और मुझे धन्यवाद भी कहेंगे।'' ''जी दादाजी'' कहकर चिंटू सो गया।

अगले दिन चिंटू जब स्कूल से लौट के आया तब दादाजी थोड़ा परेशान दिखे। हाथ–मुँह धो और स्कूल ड्रेस बदलकर उसने पूछा– ''क्या बात है दादाजी आपका मूड क्यों खराब है?''

दादाजी ने अपनी चिन्ता बताई। ''दरअसल, इधर कुछ सोचने का टाइम मिला तो मुझे लगा कि वीडियो गेम खेलने के फायदे तो बहुत हैं, पर कुछ एक आध नुकसान भी होंगे। अब स्टूडेंट्स को खाली फायदे बताएँगे तो हो सकता है तुम्हारे मम्मी–पापा की तरह उनके माता–पिता भी नाराज हो जाएँ। तो फिर ऐसा करो बेटा कि उसके नुकसान का भी एक प्रोजेक्ट बना दो। ''बस इतनी–सी बात दादाजी, ये तो मैं अभी कर देता हूँ।'' चिंटू ने मोबाइल निकाला।

गूगल सर्च के पहले वाक्य से ही उसका माथा ठनका– इसको खेलने वाले बच्चे पढ़ाई में पिछड़ने लगते हैं क्योंकि उनका ध्यान इसी में लगा रहता है। चिंटू सोचने लगा कि जब से वह वीडियो गेम में डूबा रहने लगा है तब से उसका रिजल्ट भी खराब हुआ है। पर उसने दिल कड़ा करके यह पॉइंट लिख लिया। अब वह जब भी अगला पॉइंट खोजता और उसे अपने ऊपर रख कर देखता कि हाँ ये बात तो उसके साथ भी हो रही है। उसका पॉइंट्स खोजने का उत्साह कम होने लगा। धीरे–धीरे वह निराश होने लगा। उसे अपनी गलतियाँ साफ–साफ दिखाई दे रही थीं। पर दादाजी ने कहा था इसलिए चिंटू को प्रोजेक्ट तो पूरा करना ही था।

अगले दिन जब दादाजी ने प्रोजेक्ट माँगा तो चिंटू ने कहा कि अभी पूरा नहीं हुआ है। ऐसा करते–करते दो–तीन दिन बीत गए। अब दादाजी का धीरज जवाब दे गया। ''चिंटू क्या हो गया है तुम्हें, तुम मेरे साथ वीडियो गेम भी नहीं खेल रहे हो और प्रोजेक्ट भी पूरा नहीं कर रहे हो?'' ''आज मेरा बैट–बॉल खेलने का मन है।'' कहते हुए चिंटू बैट–बॉल उठा लाया। कभी बैट बॉल, कभी बेडमिंटन तो कभी शतरंज खेलते हुए दो–तीन दिन और बीत गए। चिंटू ने प्रोजेक्ट तो पूरा नहीं किया पर वह दादाजी को भी वीडियो गेम खेलने से रोकने लगा।

हफ्ते भर बाद तो दादाजी आर–पार के मूड में आ गए और चिंटू से बोले– ''क्या बात है चिंटू, तुम मुझे वीडियो गेम खेलने से क्यों रोक रहे हो? ये तो बहुत मजेदार है।'' ''सॉरी दादाजी, मैंने आपका प्रोजेक्ट बनाया तो मुझे पता चला कि इसमें नुकसान बहुत ज्यादा है। मैंने आपकी आदत भी बिगाड़ दी, अब आपके स्टूडेंट्स को नहीं बिगाड़ना चाहता।'' कहते हुए चिंटू की आँखों से आँसू झर–झर झरने लगे।

वंदना बाजपेयी
दिल्ली

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

5	4			2		8		6
	1	9			7			3
			3			2	1	
9			4		5		2	
		1				6		4
6		4		3	2		8	
	6					1	9	
4		2			9			5
	9			7		4		2

उत्तर इसी अंक में

होली पर्व का संदेश

होली पर्व प्यार का, बच्चो!
प्यारा इसे बनाओ।
गोबर, कीचड़, गाली, छोड़ो,
प्रेम-रंग बरसाओ।।

कटुता की दुर्गन्ध हृदय से,
बिलकुल दूर भगाओ।
मृदुवाणी की गुझिया सबको,
खिलवाओ और खाओ।।

ऊँच-नीच का भेद मिटाकर,
सबको गले लगाओ।
मलकर नेह गुलाल गाल पर,
मन-उपवन महकाओ।।

डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'
शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

होली का त्योहार

ऋतु बसन्त की हुई विदाई,
रंगोत्सव धरती पर छाया।
मन में नई उमंग जगाने,
प्यारा-सा फागोत्सव आया।।

होली का त्योहार निराला,
हर मानव को लगता प्यारा।
धर्म-अधर्म हमें सिखलाए,
सत्य वचन है धर्म हमारा।।

प्रेम-रंग की वर्षा करता,
सुरंगा होली का त्योहार।
लाल, पीली और नारंगी,
गुलाल की हो रही बौछार।।

उल्लास जीवन में जगाए,
यह निराला पर्व होली का।
आशा का नव दीप जलाए,
यह पावन उत्सव होली का।।

गली-गली में शोर मचाती,
ये बच्चों की टोली आई।
घर आँगन में देखो प्यारे,
होली की मस्ती है छाई।।

ऊँच-नीच का भेद मिटाकर,
प्रेम रंग जीवन में घोलें।
मानवता की मिसाल धर कर,
बैर भाव की गाँठें खोलें।।

आओ! सारे साथी आओ,
रंगों की झोली भर लाओ।
नाचो गाओ धूम मचाओ,
होली का त्योहार मनाओ।।

मधु माहेश्वरी
सलूंबर (राजस्थान)

हारी सदा बुराई

वेद वाक्य है अच्छाई से
हारी सदा बुराई।
अच्छाई की महिमा, सारे
जग ने गाई-भाई।।

सत्य, सत्य ही रहता हरदम
झूठ, झूठ है होता।
सत्य शाश्वत रहे, झूठ का
अन्त बुरा है होता।।

बहुत बुरा था हिरणाकश्यप
क्रोधी-अत्याचारी।
खुद को ईश्वर कहता था
थर्राती दुनिया सारी।।

पर बेटा प्रह्लाद, झूठ को
सत्य नहीं कहता था।
इसीलिए वह सदा पिता के
जोर जुल्म सहता था।।

बिम्ब बुराई का था राजा
उसने मन में ठानी।
अच्छाई का रूप पुत्र है
कर दो खत्म निशानी।।

लाख प्रयास किए उसने
सुत जाए जान से मारा।
किन्तु उसे सच्चाई पर
ईश्वर का मिला सहारा ।।

शिवचरण चौहान
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

बाल दान का रिकॉर्ड बनाया

ब्रिटेन की रूथ ट्रिप ने महिला श्रेणी में 5 फीट 7 इंच और जैक ड्रेवर ने पुरुष श्रेणी में 2 फीट 11 इंच लम्बे बाल दानकर रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने द लिटिल प्रिंसेस ट्रस्ट को अपने बाल दान किए। ये ट्रस्ट बालों का उपयोग कैंसर से जूझ रहे बच्चों के लिए विग बनाने में करता है।

पंबन ब्रिज तैयार

रामेश्वरम का अत्याधुनिक पंबन ब्रिज भारत का पहला वर्टिकल रेलवे ब्रिज है, जिसे पुराने पंबन ब्रिज के पास ही बनाया गया है। लंदन के टावर ब्रिज की तरह इसके एक हिस्से के स्पैन को 5:30 मिनट के अन्दर 17 मीटर ऊपर तक उठाया जा सकता है। इससे समुद्री जहाज नीचे से निकल जाएँगे। इसके शुरू होने से रामेश्वर और मंडपम रेलवे स्टेशन की दूरी 15 किमी कम हो जायेगी और आपस में जुड़ जायेंगे।

पहला अंडर ग्राउंड म्यूजियम

एशिया का पहला ऑर्कियोलॉजिकल एक्सपीरियंसल म्यूजियम वड़नगर में बना है। इस संग्रहालय का एक बड़ा हिस्सा अंडर ग्राउंड है। यहाँ पर्यटक भूमिगत उत्खनन साइट पर जाकर खनन की प्रक्रिया को करीब से देख और समझ सकेंगे। यह स्थान 2750 साल की मानव सभ्यता का साक्षी है। वडनगर में 7 ऐतिहासिक कालखंडों के अवशेष खुदाई में मिले हैं, जो वहाँ के संग्रहालय में प्रदर्शित किए गए हैं।

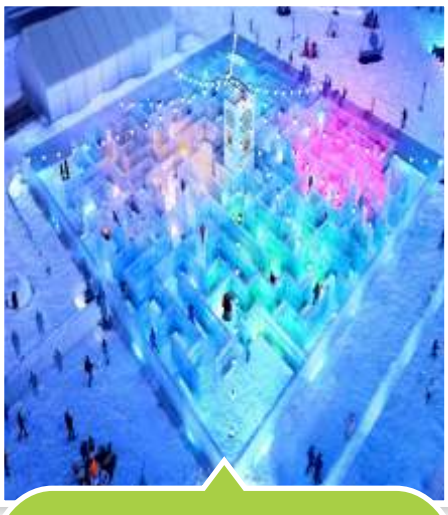

बर्फ की सबसे बड़ी भूलभुलैया

अमेरिका के मिनेसोटा राज्य के ईगनशहर में मिनेसोटा आइस फेस्टिवल ने दुनिया की सबसे बड़ी बर्फ की भूलभुलैया बनाने का रिकॉर्ड बनाया है। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के मुताबिक, यह भूलभुलैया 18,148.88 वर्गफीट में फैली है। भूलभुलैया में 8 फीट ऊँची दीवारें, 3 आइस स्लाइड, कई आइस स्कल्पचर हैं।

मणिपुर का किशोर बना दोहरा स्वर्ण पदक विजेता

मणिपुर के इम्फाल के एक छोटे से इलाके सिंगजामेई चिंगमाथक के युवा खिलाड़ी एथलीट 17 वर्षीय सरंगबाम अथौबा मैतेई ने 38वें राष्ट्रीय खेलों में दोहरी सफलता प्राप्त की। अथौबा ने पुरुषों की व्यक्तिगत ट्रायथलॉन में खेलों का पहला स्वर्ण पदक जीता और उसके बाद पुरुषों की व्यक्तिगत डुएथलॉन में दूसरा स्वर्ण अपने नाम किया। उसने एक घंटा, एक मिनट और एक सेकंड में ट्रायथलॉन स्पर्धा पूरी की और स्वर्ण पदक जीता।

अनेक विशेषताओं वाला छोटा घर

एक अमेरिकी कम्पनी ड्राइव किया जा सकने वाला छोटा घर लेकर आई है। यह कैंपरवैन फ्रंट, साइड और बैक तीनों तरफ से फोल्डेबल है। बटन दबाते ही लिविंग रूम 400 फीट तक फैल जाता है। एआई खुद हवा से रोज 15 गैलन पानी बना लेता है ओर छत पर लगे सोलर पैनल से जरूरत की बिजली ले लेता है।

दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन

महाकुम्भ

– संचय जैन, उदयपुर(राज.)

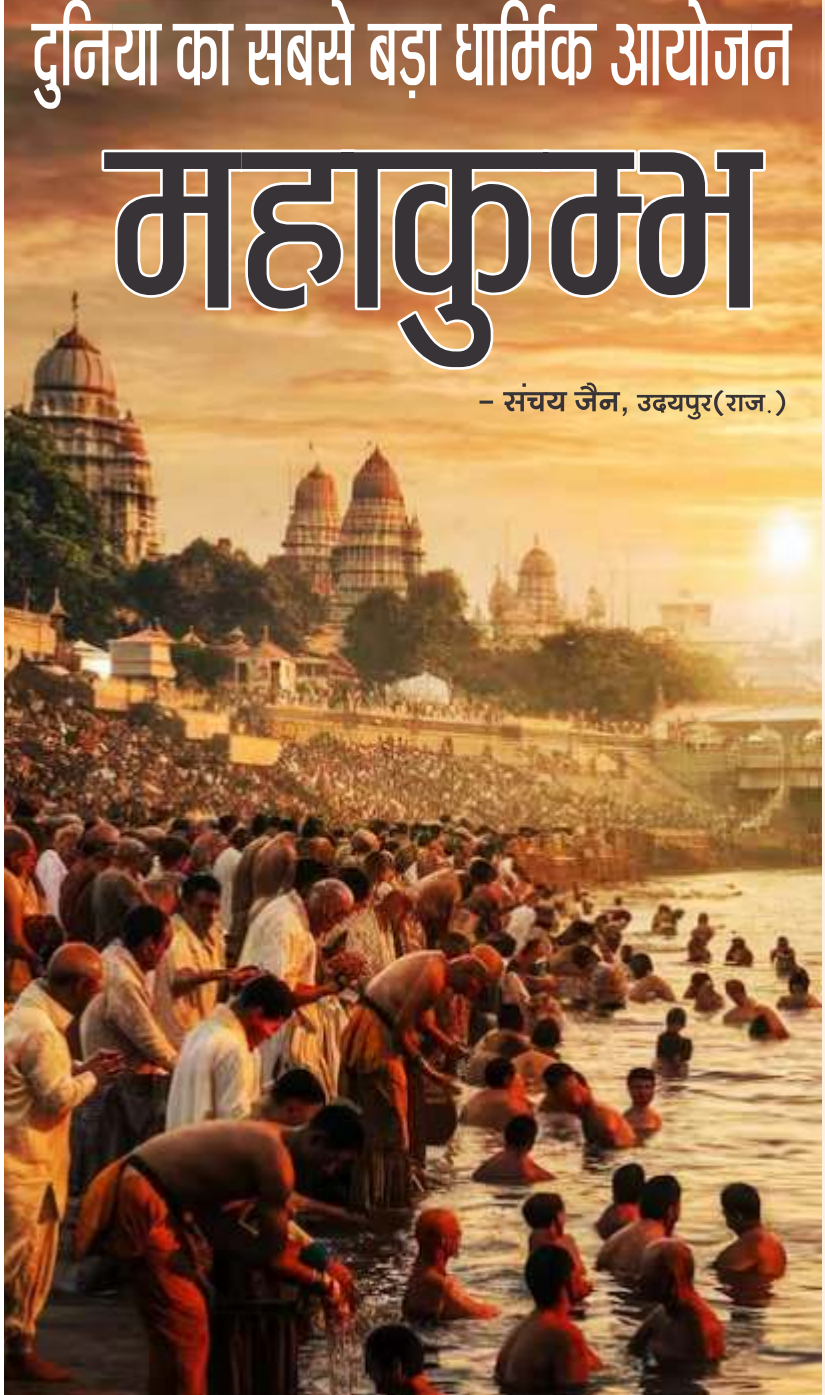

- दुनिया में अनेक धर्म हैं। ह
  शाखाएँ भी। धर्म के प्रति आ
- सभी धर्म हमें अच्छा इनसान
  प्रभाव तभी होता है जब वह ह
- दुनियाभर में धार्मिक आयोज
  इनसे लोगों को धर्म से जुड़ने
- इन आयोजनों की सूची में भ
  स्थान पर रहा है।

- कुंभ के तीन प्रकार हैं– म
  144 वर्ष, 12 वर्ष और 6 व
- इस वर्ष का कुम्भ मेला
  ऐतिहासिक बन गया।
- सरकारी आँकड़ों के अनु
  आने वाले श्रद्धालुओं की स
- उत्तरप्रदेश के प्रयागराज
  फरवरी 2025 तक चला।

हर धर्म की अनेक शाखाएँ और उप
स्था रखना मानव स्वभाव है।
न बनने का रास्ता दिखाते हैं। धर्म का
हमारे आचरण में उतरे।
जनों की सदियों से परम्परा रही है।
की प्रेरणा मिलती है।
ारत का कुम्भ मेला कई दशकों से शीर्ष

- प्रयागराज का महाकुंभ मेला क्षेत्र करीब 4000 हेक्टेयर भूमि पर फैला है, इसे 25 सेक्टरों में बाँटा गया है।
- हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार यहाँ तीन नदियों गंगा, यमुना, सरस्वती (अदृश्य) का त्रिवेणी संगम है जहाँ करोड़ों श्रद्धालु पवित्र स्नान करने के लिए डुबकी लगाते हैं।
- इस आयोजन को डिजिटल कुम्भ कहा गया है क्योंकि इसकी व्यवस्थाओं में एआई संचालित उपकरण व ड्रोन सहित आधुनिक संचार तकनीक का उपयोग किया गया।
- श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए देश के विभिन्न भागों से भारतीय रेलवे ने प्रयागराज के लिए हजारों की संख्या में विशेष ट्रेनें चलाई ।

हाकुंभ, पूर्ण कुंभ, अर्ध कुंभ; ये क्रमशः
र्ष बाद आयोजित होते हैं।
श्रद्धालुओं की सहभागिता की दृष्टि

सार इस महाकुम्भ में देश–विदेश से
ंख्या 50 करोड़ को पार कर गई।
में महाकुम्भ मेला 13 जनवरी से 26

धैर्य

चित्रकथा-

संकेत गोस्वामी, जयपुर

मध्य प्रदेश का राज्य पक्षी

दूधराज

यह दूध की तरह सफेद एक सुन्दर पक्षी है जिसका सिर कलगीयुक्त और पूँछ बहुत लम्बी होती है। इसे दूधराज, शाही बुलबुल और हुसैनी बुलबुल भी कहते हैं। सदा प्रसन्न रहने वाला यह चंचल पक्षी सम्पूर्ण भारत में पाया जाता है। इसे घने पतझड़ वाले जंगलों और बाँस के जंगलों के छायादार भागों में रहना अधिक पसन्द है। यह वृक्षवासी पक्षी अधिकतर पानी के पास रहता है और पानी से खेलता है।

इसकी गर्दन बहुत छोटी तथा पूँछ इसके शरीर से भी लम्बी और दो भागों में विभक्त होती है। प्रकृति ने इसे अनोखे रंगवाला बनाया है। अल्प आयु में नर व मादा बादामी भूरे (रूफस मार्फ) रंग के होते हैं तथा वयस्क होने के बाद नर का रंग सफेद और पूँछ लम्बी हो जाती है। मादा सदैव बादामी भूरे (रूफस मार्फ) रंग की ही रहती है। यह विश्व का एकमात्र पक्षी है जो इस प्रकार रंग बदलता है।

डॉ. कैलाश चन्द सैनी
जयपुर (राजस्थान)

हिन्दी नाम
दूधराज, शाही बुलबुल
अँग्रेजी नाम
Paradise Flycatcher
वैज्ञानिक नाम
Terpsiphone paradisi
फोटो
रघु अय्यर

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

जो जीते हैं जमाने के लिए

गरीबों का सहारा बने डॉक्टर दम्पती

आज के महँगाई के जमाने में चिकित्सकों के पास जाने से हर कोई डरता है। डॉक्टर के प्रति लोगों का नजरिया यही बन गया है कि एक बार उनके पास जाओ तो दो–चार हजार रुपए झट खर्च हो जाएँगे। लेकिन पुणे के एक डॉक्टर दम्पती सबसे अलग हैं। ये बीते आठ–नौ वर्षों से अपने संगठन सोहम ट्रस्ट के माध्यम से सड़क पर भीख माँगने वालों का मुफ्त में इलाज करते हैं।

डॉ. अभिजीत हमेशा से अपना खुद का क्लिनिक खोलना चाहते थे, लेकिन मध्यम वर्गीय परिवार से होने के कारण उनके लिए यह आसान नहीं था। इसलिए उन्होंने अपने गाँव में घर–घर जाकर चिकित्सा सेवाएँ देने का फैसला किया। इसी दौरान उनकी मुलाकात एक गरीब परिवार से हुई जो भीख माँगने पर मजबूर था। परिवार के मुखिया, एक बुजुर्ग व्यक्ति ने डॉ. अभिजीत को बहुत उपयोगी सलाह दी। इस घटना ने डॉ. अभिजीत के जीवन की दिशा बदल दी।

उस बुजुर्ग व्यक्ति की सलाह पर उन्होंने पुणे में एक पुनर्वास कार्यक्रम में समन्वयक के तौर पर काम किया। उन्हें एक अंतरराष्ट्रीय संगठन के साथ काम करने का अवसर भी मिला। अगले दशक में डॉ. अभिजीत पेशेवर सीढ़ी पर चढ़ते गए और प्रतिमाह 3 लाख रुपये से अधिक वेतन पाने लगे। उन बुजुर्ग के उपकार के बदले इस समुदाय को वे कुछ वापस देने के तरीकों के बारे में सोचने लगे। इसी प्रक्रिया में उनके मन में भिखारियों का मुफ्त उपचार करने का विचार आया।

तभी से पुणे में डॉ. अभिजीत सोनवणे और उनकी पत्नी डॉ. मनीषा भिखारियों के लिए एक 'मोबाइल स्ट्रीट क्लिनिक' चला रहे हैं। डॉक्टर दम्पती पुणे के गरीबों का मुफ्त उपचार करते हैं। यहाँ तक कि अपने बेसहारा मरीजों के अस्पताल के बिल का भुगतान भी ये अपने पास से करते हैं। उन्होंने अब तक 1000 से ज्यादा भिखारियों का इलाज किया है।

डॉ. सोनवणे का दिन सुबह जल्दी शुरू होता है। उन्हें पीठ पर 'डॉक्टर फॉर बेगर' लिखा हुआ एप्रन पहने देखा जा सकता है। वे अपनी मोटरसाइकिल पर अपना क्लिनिक ले जाते हैं। इसमें दवाइयाँ और चिकित्सा उपकरण हैं।

ये पति–पत्नी भिखारियों को रोजगार में मदद करना चाहते हैं। अब तक वे 49 भिखारियों को भीख माँगने का धंधा छुड़ा चुके हैं। उनका कहना है कि उनका पहला लक्ष्य चिकित्सा सेवा प्रदान करना है, लेकिन उनका अन्तिम लक्ष्य उन्हें आत्मनिर्भर बनने में मदद करना है।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

नारियल का झाड़ू

आशी के स्कूल में बच्चों की गर्मी की छुट्टियाँ हो रही थी। सभी बच्चे खुश थे पर आशी थोड़ा उदास थी क्योंकि सभी बच्चे छुट्टियों में अपने–अपने गाँव जा रहे थे तो कुछ बच्चों के माता–पिता गर्मी की छुट्टी बिताने के लिए ठंडी जगहों पर जा रहे थे जहाँ कि साल भर ठंडा मौसम रहता है।

आशी के माता–पिता गरीब थे। उनके पास उतना पैसा नहीं था कि वे कहीं बाहर जा पाते इसलिए वह कहीं नहीं जा रही थी। उसकी गर्मी की छुट्टी यहीं रहकर बीतने वाली थी।

छुट्टी की घंटी बजी और बच्चे एक दूसरे को बाय करके अपने–अपने घर जाने लगे। आशी ने भी अपना बस्ता समेटा और घर की ओर चल पड़ी। वह जहाँ रहती थी, उसके घर से थोड़ी दूरी पर एक बहुत बड़ा नारियल का पेड़ था। उसमें नारियल भी फले थे। वह जैसे ही नारियल के पेड़ के पास पहुँची। नारियल के सूखे हुए लम्बे–लम्बे दो पत्ते गिर पड़े। वहाँ पहले से ही एक औरत बकरी चरा रही थी। उसने दोनों पत्तों को उठाकर अपने सिर पर रखा और बकरियों को लेकर जाने लगी।

आशी से रहा नहीं गया और उसने उस औरत से पूछा– "आंटी, आप इस पत्ते का क्या करेंगी... क्या आप इसे घर ले जाकर जलाएँगी?'' वह आशी की बातों पर हँस पड़ी। बोली– "बेटा, यह नारियल के पत्ते बहुत काम की चीज हैं।''

''वह कैसे आंटी?'' आशी ने पूछा। "इन पत्तों से मैं घर बुहारने के लिए झाड़ू बनाऊँगी। नारियल का झाड़ू तुमने देखा है ना। तुम्हारे घर में भी होगा।''

"आंटी यह बनता कैसे है? क्या आप मुझे बनाना सिखाएँगी?'' आशी ने पूछा। "क्यों नहीं, जरूर सिखाऊँगी, पर इसके लिए तुम्हें मेरे घर आना होगा।''– उस औरत ने कहा। आशी कुछ देर सोचती रही। उसे तो कहीं जाना था नहीं। होमवर्क करने के बाद दिनभर फुरसत ही फुरसत है। उसने तुरन्त हामी भर दी। "हाँ आंटी, मैं आपके घर आऊँगी।''

दूसरे दिन आशी उस औरत के घर गई। आशी ने देखा वह औरत नारियल के पत्ते उसके लम्बे डंठल से एक–एक करके अलग कर रही है। आशी भी इस काम में उसकी मदद करने लगी। डंठल से पत्ते अलग करने के बाद पत्तों को बीच से फाड़ देने पर एक लम्बा सींक निकल आता था। वह सभी पत्तों को फाड़–फाड़कर उसके बीच से सींक निकालकर एक जगह जमा कर रही थी। इस तरह जब सारे पत्तों से सींक निकल गए तब उस औरत ने सारे सींकों को एक साथ बाँधकर झाड़ू बना दिया।

आशी आश्चर्य से देख रही थी। बोल पड़ी– "अरे, यह तो सचमुच का झाड़ू बन गया।" और वह झाड़ू लेकर आँगन बुहारने लगी। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। यह तो बहुत ही आसान काम है। इसे तो मैं भी बना लूँगी। आशी खुशी–खुशी घर लौट पड़ी। अब उसे नारियल के पेड़ से पत्ते गिरने का इन्तजार था।

प्रदीप कुमार शर्मा
जमशेदपुर (झारखंड)

छोटू की नादानी

एक दिन छोटू के घर में दो चूहे घुस गए। उन्हें घर से बाहर निकालने के लिए परिवार के सभी सदस्य एक तरफ और वे दोनों एक तरफ, फिर भी वे घर से बाहर जाने के लिए तैयार नहीं थे।

चारों ओर से निराश होने पर आखिर छोटू के पापाजी बाजार से एक पिंजरा लेकर आये। चूहे नए पिंजरे को देख कर उसके निकट जाते। उसके चारों ओर चक्कर काटते। पिंजरे के अन्दर कील पर टँगे आम के छिलके की तरफ ललचाई नजर से देखते, दूर से ही उसे सूँघते लेकिन चूहे पकड़ में नहीं आ रहे थे।

एक दिन छोटू पलंग के पास ही नीचे फर्श पर बैठा अकेला ही अपने खिलौनों से खेल रहा था। तभी उसे पिंजरे का ढक्कन गिरने की आवाज सुनाई दी। छोटू फुर्ती से पिंजरे के पास गया। उसने देखा कि एक चूहा पिंजरे के अन्दर उछल–कूद कर रहा था और दूसरा चूहा पिंजरे के बाहर बैठा उसे ध्यान से देख रहा था।

छोटू ने सोचा कि सम्भवतः बाहर वाला चूहा पिंजरे के अन्दर जाना चाहता है। यह सोच कर उसने पिंजरे के ढक्कन को धीरे से खोल दिया। लेकिन जैसे ही उसने पिंजरे के ढक्कन को ऊपर किया, अन्दर वाला चूहा फुर्ती से बाहर निकल कर दूर भाग गया। बाहर वाला चूहा तो पहले ही गायब हो चुका था। इसी बीच उसकी मम्मी भी जाग गई। जब उसे छोटू की नादानी का पता लगा तो उसे छोटू के भोलेपन पर हँसी भी आई और गुस्सा भी आया।

ओम प्रकाश तँवर
चूरू (राजस्थान)

बाल साहित्य समागम
16-18 अगस्त, 2024

परख

आपकी प्रिय बाल पत्रिका 'बच्चों का देश' ने हाल ही में अपने प्रकाशन की रजत जयंती मनाई है। इस ऐतिहासिक अवसर पर अणुविभा मुख्यालय 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' राजसमंद में 16 से 18 अगस्त को आयोजित 'बाल साहित्य समागम' एक यादगार आयोजन बन गया। इस मौके पर प्रकाशित पत्रिका के रजत जयंती विशेषांक को भी व्यापक सराहना प्राप्त हो रही है। हाल ही में डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी ने 20 पृष्ठ की विस्तृत समीक्षा लिखी है जिसे अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने भी प्रकाशित किया है। प्रस्तुत है उनकी समीक्षा का सार रूप-

शोधार्थियों के लिए अनमोल खजाना है 'रजत जयंती विशेषांक'

'बच्चों का देश' पत्रिका अगस्त, 1999 में प्रारम्भ हुई और आज 25 वर्ष की युवा दहलीज पर पहुँच चुकी है। पत्रिका परिवार ने पत्रिका की रजत जयंती बहुत ही धूमधाम से मनाई। देशभर से 100 से अधिक बाल साहित्यकारों का 'बालसाहित्य समागम' कार्यक्रम राजसमन्द में आयोजित किया और देश भर में एक नई मिसाल कायम की।

'बच्चों का देश' का रजत जयंती विशेषांक रंगीन शानदार कलेवर के साथ प्रकाशित किया गया है। इस विशेषांक का कवर पृष्ठ 25 वर्षों से एक–एक अंक को शामिल कर बनाया गया है, जो मनमोहक तो है ही, आकर्षित भी करता है। प्रारम्भ में रजत जयंती के अवसर पर आचार्य महाश्रमण जी का पावन संदेश अंकित है। अपने संपादकीय के माध्यम से संचय जैन जी के विचार सदैव प्रेरित करते हैं। इस बार के संपादकीय में एक कथा के माध्यम से गुदगुदाया है। अगले पृष्ठों में 18–20 अगस्त, 2024 को राजसमन्द में आयोजित बाल साहित्य समागम के कुछ चित्र और रिपोर्ट 'बाल साहित्य संवर्धन की दिशा में एक यादगार आयोजन' नाम से प्रकाशित किए गए हैं।

'बच्चों का देश' पत्रिका की शुरुआत नई पीढ़ी के नव–निर्माण के संकल्प के साथ हुई थी। एक खंड में हम 'बच्चों का देश' की 25 वर्षों की अनवरत यात्रा के बारे में विस्तार से पढ़ते हैं। 'व्यक्तित्व विकास का सशक्त माध्यम' टैग लाइन को लेकर चल रही 'बच्चों का देश' पत्रिका ने कई उतार–चढ़ाव देखे हैं। 'बच्चों का देश' पत्रिका के पहले अंक की संपादक कल्पना जैन थीं, जिन्होंने अपने संपादन कौशल से पत्रिका को सींचा और निखारा।

रजत जयंती विशेषांक का एक और आकर्षण पृष्ठ 42 पर प्रकाशित 'विद्यार्थी अणुव्रत' है। यह प्रत्येक विद्यार्थी को अपने जीवन में उतारना चाहिए। दिल को छू लेने वाले ये विचार आज के दौर में प्रासंगिक हैं। पत्रिका में अनेक राष्ट्रीय विभूतियों के सुन्दर संदेश भी यत्र–तत्र प्रकाशित हुए हैं।

यह बाल पत्रिका अपने आप में एक बालग्रंथ है, जो बच्चों के लिए ही नहीं, बड़ों के लिए भी संग्रहणीय है। इसमें कहानी हैं, कविताएँ हैं, आलेख हैं, प्रतियोगिताएँ हैं, पहेलियाँ हैं, जो बच्चों को जोड़ती हैं, सीख देती हैं, आगे बढ़ने का जरिया बनती हैं। यह विशेषांक 'बच्चों का देश' पत्रिका के 25 वर्षों की यात्रा के साक्षी रहे बाल साहित्य रचनाकारों की रचनाओं को समेटने का एक बड़ा और सुन्दर प्रयास है। कुल मिलाकर 'बच्चों का देश' पत्रिका ने बच्चों के बीच 'नंदन' जैसी पत्रिका की कमी को पूरा करने का महती कार्य किया है।

डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी
आटा सम्भल (उत्तर प्रदेश)

दिव्यम बोथरा, कक्षा 4, लिलुआ (प. बंगाल)

खुशबू, कक्षा-9, गोला (खीरी)

दृष्टि माहेश्वरी, कक्षा-प्रेप, चित्तौड़गढ़(राज.)

हाथी आया

सूँड हिलाता हाथी आया।
सब बच्चों को इसने हँसाया।।

देख इसे सब खुश हो जाते।
घर से बाहर देखने आते ।।

दीदी ने उसे केला खिलाया।
भैया पत्तों की डाली लाया।।

लंबे-लंबे हाथी के होते दाँत।
इसकी होती अलग सी बात।।

सूँड में पानी भर हाथी आता।
हाथी सबको मित्र बनाता।।

हाथी पर कोई हमें बैठाए।
हाथी के कोई मजे दिलाए।।

पाखी जैन, कक्षा 7, उदयपुर (राजस्थान)

अमिशी चौरडिया, उम्र-11वर्ष, कोलकाता (प. बंगाल)

इस स्तम्भ के लिए अपनी रचना
मोबाइल नं. 9351552651 पर भेजें।

कहानी

बगीचे का जन्मदिन

दिशा ने पाठशाला में सभी सहपाठियों को जब यह बताया कि दो दिन बाद वह अपने घर के छोटे–से बगीचे का जन्मदिन मना रही है तो सब हैरत में पड़ गये। दिशा ने सबको आने को कहा था।

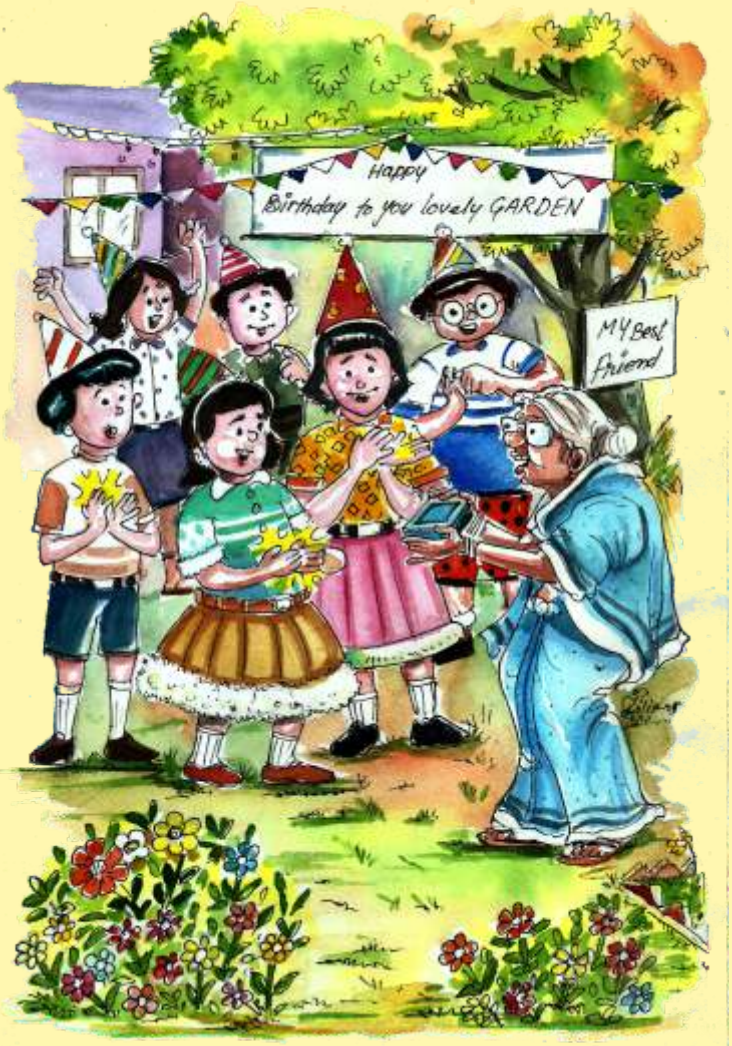

दिशा ने अपनी कॉलोनी के मित्रों को भी यही सब बता दिया। मगर सभी अजीब–सी बातें करने लगे। रोहन ने कहा कि दो महीने पहले दिशा ने अपनी पालतू बिल्लियों का जन्मदिन भी मनाया था। कहीं ऐसा तो नहीं कि दिशा को इस बात का घमंड है कि वह पढ़ाई में अच्छी है या वह अपने आपको कुछ खास ही दिखाना चाहती है। यह सुनकर सबने गरदन हिलाई। सबको यही लगा कि दिशा तो हमको पागल ही बना देगी।

मगर एक दिन पहले दिशा ने सबको दोबारा याद दिला दिया कि आना ही है। इसलिए मन मारकर सबको जाना ही पड़ा। दिशा ने सबको उपहार लाने के लिए मना कर दिया था। बस इतना कहा था कि एक–एक बोतल पानी ले आना। सबने एक–एक बोतल पानी भरा और उसे लेकर पहुँच गये दिशा के घर। दिशा का छोटा–सा बगीचा सजा हुआ था। उसने आर्ट एंड क्राफ्ट में जो बनाना सीखा उससे बगीचा सजा कर मनमोहक बना रखा था। बगीचे के फूल भी कुछ अधिक ही खूबसूरत लग रहे थे। दिशा ने सबको एक डिब्बा दिया। डिब्बे में पर्चियाँ थी। सबको अलग–अलग पर्ची मिली। किसी को फूल पर कविता सुनानी थी। किसी को तितली पर। किसी को कहानी सुनानी थी। सबने अपनी–अपनी पर्ची में जो लिखा था वह करके दिखाया। खूब तालियाँ बज रही थीं। खूब रौनक और धूमधाम हो गई थी। सब को अच्छा लग रहा था।

दिशा के दादाजी ने सबको एक–एक प्यारा–सा टिफिन बॉक्स उपहार में दिया। सबको बगीचे के नीबू का शरबत पीने को मिला। बगीचे में ही अमरूद लगे थे। सबने पके अमरूद का मजा लिया। उसके बाद सबको पकौड़े खाने को मिले। अन्त में सबने 'हैप्पी बर्थ डे' कहते हुए अपनी बोतलों से पौधों को पानी पिलाया। सबको इतना मजा आया कि उनका यहाँ से अपने घर जाने का मन ही नहीं हो रहा था। विदा लेते समय सबको एक–एक फूल खिला हुआ गमला भी भेंट में मिला।

दिशा को सबने यही कहा– ''दिशा! हमें तुम पर गर्व है। अब हम भी अपने घर के बरामदे में फूल लगाकर तितली को आमन्त्रित करेंगे।'' जाते समय सबकी आवाज 'हैप्पी बर्थ डे अगेन' गूँज रहा था। यह सुनकर दिशा का बगीचा और भी अधिक खिलखिला उठा।

संदीप पांडे
अजमेर (राजस्थान)

आप कितने सूक्ष्मदर्शी हैं?

इस चित्र में बिल्कुल एक से दो पक्षी कौन से हैं?

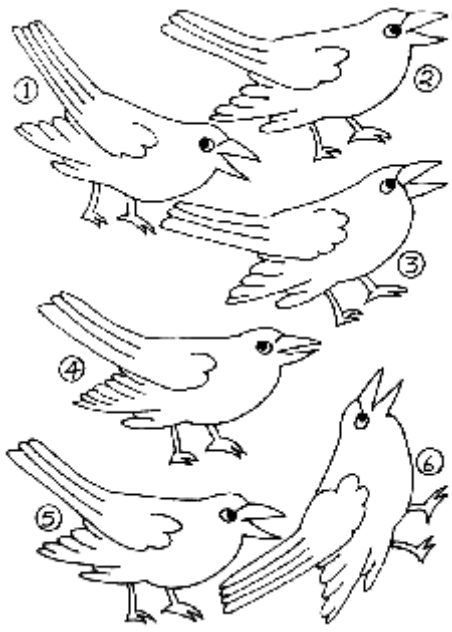

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

बूझो तो जानें

1
सुबह-सुबह हर रोज जगाता,
सिर पर मेरे ताज।
सोच समझकर बोलो मिष्ठी,
सुखविंदर, शिवराज।

2
पेड़ों पर मैं रहने वाली,
भूरा काला रंग।
चार अक्षर मेरे नाम में,
आते हैं हरदम।।

3
प्रथम हटे तो रस बन जाऊँ
अंत हटे तो सार।
मेरी गरदन लम्बी होती,
बोलो रामकुमार।

4
मैं पक्षी हूँ एक अनोखा,
मरे हुए को खाऊँ।
रेड डाटा बुक में नाम मेरा
बोलो क्या कहलाऊँ?

5
प्रथम हटे तो टेर कहें सब,
भूरा, काला रंग।
छोटा-सा मैं पंछी प्यारा,
बोलो राज तरंग।

डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव, जालौन (उत्तर प्रदेश)

सफलता का सबक

व्हाट्सएप कहानी

एक आठ साल का लड़का मुकेश गर्मी की छुट्टियों में अपने दादाजी के पास गाँव घूमने आया। एक दिन वह बड़ा खुश था, उछलते–कूदते वो दादाजी के पास पहुँचा और बड़े गर्व से बोला– ''जब मैं बड़ा होऊँगा तब मैं बहुत सफल बनूँगा। क्या आप मुझे सफल होने के कुछ टिप्स दे सकते हैं?'' दादाजी ने 'हाँ' में सिर हिला दिया और बिना कुछ कहे मुकेश का हाथ पकड़ा और उसे करीब की पौधशाला में ले गए।

वहाँ जाकर दादाजी ने दो छोटे–छोटे पौधे खरीदे और घर वापस आ गए। वापस लौटकर उन्होंने एक पौधा घर के बाहर लगा दिया और एक पौधा गमले में लगा कर घर के अन्दर रख दिया। ''क्या लगता है तुम्हें, इन दोनों पौधों में से भविष्य में कौनसा पौधा अधिक सफल होगा?'' –दादाजी ने मुकेश से पूछा।

मुकेश कुछ क्षणों तक सोचता रहा और फिर बोला– ''घर के अन्दर वाला पौधा ज्यादा सफल होगा क्योंकि वह हर एक खतरे से सुरक्षित है जबकि बाहर वाले पौधे को तेज धूप, आँधी–पानी और जानवरों से भी खतरा है।'' दादाजी बोले– ''चलो देखते हैं आगे क्या होता है।'' और वह अखबार उठा कर पढ़ने लगे।

कुछ दिन बाद छुट्टियाँ खत्म हो गयी और मुकेश वापस शहर चला गया। इस बीच दादाजी दोनों पौधों पर बराबर ध्यान देते रहे और समय बीतता गया। कुछ साल बाद एक बार फिर वह अपने मम्मी–पापा के साथ गाँव घूमने आया और अपने दादाजी को देखते ही बोला– ''दादाजी, पिछली बार मैंने आपसे सफलता के कुछ टिप्स माँगे थे पर आपने तो कुछ बताया ही नहीं, पर इस बार आपको जरूर कुछ बताना होगा।''

दादाजी मुस्कुराये और लड़के को उस जगह ले गए जहाँ उन्होंने गमले में पौधा लगाया था। अब वह पौधा एक खूबसूरत पेड़ में बदल चुका था। मुकेश बोला– ''देखा दादाजी, मैंने कहा था न कि ये वाला पौधा ज्यादा सफल होगा।'' ''अरे, पहले बाहर वाले पौधे का हाल भी तो देख लो।'' ये कहते हुए दादाजी मुकेश को बाहर ले गए। बाहर एक विशाल वृक्ष गर्व से खड़ा था। उसकी शाखाएँ दूर तक फैली थीं।

''अब बताओ, कौनसा पौधा ज्यादा सफल हुआ?'' दादाजी ने पूछा। ''बाहर वाला, लेकिन ये कैसे सम्भव है, बाहर तो उसे न जाने कितने खतरों का सामना करना पड़ा होगा? फिर भी।'' लड़का आश्चर्य से बोला।

दादाजी मुस्कुराए और बोले– ''हाँ, लेकिन चुनौती का मुकाबला करने के अपने फायदे भी तो हैं, बाहर वाले पेड़ के पास आजादी थी कि वह अपनी जड़ें जितनी चाहे उतनी फैला ले, अपनी शाखाओं से आसमान को छू ले। बेटे, इस बात को याद रखो– अगर तुम जीवन भर सुरक्षा व सुविधा पर ध्यान दोगे तो तुम कभी भी उतना नहीं विकास कर पाओगे जितनी तुम्हारी क्षमता है, लेकिन अगर तुम तमाम खतरों के बावजूद इस दुनिया का सामना करने के लिए तैयार रहते हो तो तुम्हारे लिए कोई भी लक्ष्य हासिल करना असम्भव नहीं है।''

मुकेश ने लम्बी साँस ली और उस विशाल वृक्ष की तरफ देखने लगा। वह दादाजी की बात समझ चुका था, आज उसे सफलता का एक बहुत बड़ा सबक मिल गया था।

विश्व विरासत स्थल-15

फतेहपुर सीकरी

आज हम आपको आगरा से 37 किमी दूर स्थित फतेहपुर सीकरी की सैर पर लिए चलते हैं। वर्ष 1986 ई. में यूनेस्को द्वारा इस शहर को विश्व विरासत सूची में स्थान दिया गया था। यह नगर कभी अपनी भव्यता और ऐश्वर्य के लिए पूरी दुनिया में मशहूर रहा है। तीसरे मुगल सम्राट अकबर ने 1571 ई. में इस शहर की स्थापना की थी। कहते हैं कि अकबर निःसंतान था। सूफी संत शेख सलीम चिश्ती के आशीर्वाद से शहजादा सलीम का जन्म हुआ था। तब अकबर ने सूफी संत के प्रति आदर और सम्मान प्रदर्शित करने के लिए इस शहर के निर्माण की योजना बनाई थी।

यह शहर कई वर्षों तक मुगल साम्राज्य की राजधानी बना रहा। परन्तु पानी की कमी के चलते अकबर को 1585 ई. में राजधानी को फिर से आगरा ले जाना पड़ा। फतेहपुर सीकरी की इमारतें मुस्लिम वास्तुकला का सबसे अच्छा उदाहरण हैं। इन इमारतों में बुलन्द दरवाजा, दीवाने खास, जोधाबाई का महल, पंच महल, शेख सलीम चिश्ती की दरगाह, अनूप तालाब आदि प्रमुख हैं।

बुलन्द दरवाजा अकबर ने गुजरात विजय के उपलक्ष्य में बनवाया था। यह भारत के सबसे विशाल दरवाजों में से एक है। इसकी ऊँचाई 280 फीट है। 52 सीढ़ियाँ चढ़ने के पश्चात इस इमारत में प्रवेश करते हैं। शेख सलीम चिश्ती की दरगाह का निर्माण 1580–81 के बीच किया गया था। इसमें सफेद संगमरमर की नक्काशी और सीपीदार जालियों का प्रयोग किया गया है। फतेहपुर सीकरी के बाग–बगीचे और अनूप तालाब भी देखने योग्य हैं।

वैसे तो यहाँ साल भर पर्यटक आते–जाते रहते हैं मगर फरवरी–मार्च और नवम्बर–दिसम्बर में सबसे अधिक भीड़ देखी जाती है।

नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
नई दिल्ली

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस- 8 मार्च

मनु रेगर

संगीता कंवर

खुशी कुमारी

रितिका

काव्या

रानू

अलका

गुनगुन

कोमल

खुशी

इशानी

निशा

पायल

सामग्री सौजन्य : आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक श्रीनगर (अजमेर)

जीवन का आधार है संयम

संयम क्या है? संयम किसे कहते हैं? संयम का अर्थ क्या है? संयम में ऐसी क्या बात है कि हमारे बड़े बुजुर्ग, हमारे पूर्वज हमेशा संयम को अपनाने पर इतना जोर देते आए हैं। चलिए, आज इस पर विचार करते हैं और समझने की कोशिश करते हैं कि इस शब्द का क्या महत्त्व है?

बच्चो, संयम का अर्थ है नियन्त्रण, स्वयं का स्वयं पर नियन्त्रण। अपनी इच्छा को काबू में रखना, नियमों का पूरा पालन करना, यह सब कुछ संयम के अन्तर्गत आता है। संयम एक ऐसा शब्द है जिसमें बहुत कुछ समाया हुआ है। मन का संयम, व्यवहार का संयम, भाषा का संयम, भोजन का संयम आदि। आपके जीवन की हर चीज इस संयम के दायरे के अन्दर आती है।

हमारे आसपास कुछ ऐसे लोग होते हैं जिन्हें देखकर हमारे मन में उनके प्रति आदर का भाव जागृत होता है। क्यों होता है ऐसा? क्या खास है उनमें? अगर आप ध्यान से देखेंगे तो आप पाएँगे कि उनका व्यवहार बहुत संयमित होता है। जब भी वे किसी से बात करते हैं तो विनम्रता से करते हैं और दूसरे की बात को पूरा सुनते हैं, सम्मान देते हैं। वे लोग ऐसा क्यों कर पाते हैं? और हम क्यों नहीं कर पाते? इस बिन्दु पर मनन करने पर हम देखते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में, अपने व्यवहार में, संयम को अपनाया है। वे कोई भी बात हड़बड़ा कर नहीं करते। धीरज से, शांति से, विचार कर के, संयम के साथ किसी भी कार्य को करते हैं। ऐसा करने पर परिणाम सुखद होता है।

आपकी ही कक्षा का कोई साथी आप सबको प्रिय होता है। उसका किसी से कोई झगड़ा नहीं होता और सबको लगता है कि वह उसका मित्र है। सर्वप्रिय होने का कारण भी उसका संयम का यह गुण ही है। उस बच्चे ने संयम को अपने व्यवहार में ढाल लिया है। अपनी आदत का हिस्सा बना लिया है। किसी से बात करने से पहले वह उसकी पूरी बात को ध्यान से सुनता है और विनम्रतापूर्वक जवाब देता है। सबको सामान्य रूप से आदर देता है। फिर भला वह किसी को प्रिय क्यों नहीं होगा?

आज हम संयम को परिभाषित करने की कोशिश करते हैं। संयम, जीवन का वह गुण है जो हमें धीरज सिखाता है, विनम्रता सिखाता है, दूसरों के प्रति हमदर्दी रखना सिखाता है। संयम को अपनाने से हमारा अहम् हमारे नियन्त्रण में रहता है। हमारी वाणी मधुर हो जाती है। हमारे अन्दर बड़ों के प्रति आदर और छोटों के प्रति स्नेह स्वाभाविक रूप से आ जाता है।

अगर संयम हमें इतना कुछ देता है तो क्यों न हम आगे बढ़कर संयम को अपने जीवन में अपनायें।

- ❑ संयम को अपनाने का आरम्भ आप अपनी वाणी से कीजिए। सबसे विनम्रता के साथ बात कीजिये।
- ❑ मोबाइल पर समय कम व्यतीत करिए और अपने माता–पिता की आँखों का तारा बन जाइए।
- ❑ भोजन में मीन–मेख निकालना बन्द करिए और माँ के हाथ का बना पौष्टिक भोजन खुशी से खाइए।
- ❑ शिक्षकों द्वारा दिए गए कार्य को नियमित रूप से कीजिए।

आप देखेंगे कि आप कक्षा में भी स्वतः ही जवाब देने लगे हैं क्योंकि अब आपको पाठ समझ में आ रहा है। मित्रों के बीच भी आप लोकप्रिय हो जाएँगे।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की बात करते हुए कहा था कि संयम ही जीवन है। उन्होंने संयम की अनुपालना के लिये अणुव्रत के नियम प्रस्तुत किये जो वास्तव में जीवन को सही दिशा में ले जाते हैं। तो आओ, संयम की इस डगर पर सब साथ मिलकर कदम बढ़ाते हैं।

नीलम राकेश
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

रंग भरो प्रतियोगिता

इस चित्र में रंग भरकर इसका फोटो मोबाइल नं. 9351552651 पर 31 मार्च तक भेजें। अपना नाम, कक्षा व शहर भी लिखें। श्रेष्ठ चित्रांकन प्रकाशित एवं पुरस्कृत होंगे।

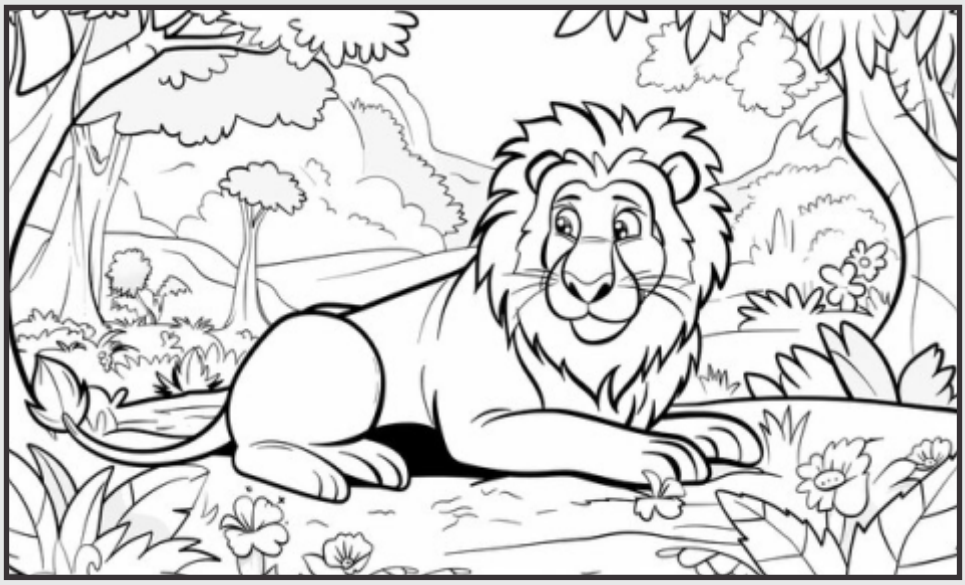

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) आकाशगंगा Galaxy (ब) सौर ज्वाला Solar flame (स) धूमकेतू (द) शनि ग्रह (2) गुरु/वृहस्पति Jupiter, बुध Mercury (3) शनि Saturn (4) पृथ्वी (5) 27 दिन, 7 घंटे, 45 मिनट (6) शुक्र Venus (7) तापक्रम में भिन्नता (8) 25 करोड़ वर्ष (9) एस. चन्द्रशेखर ने (10) 21 जून

अन्तर ढूँढ़िए

(1) आसमान में बादल गायब (2) पक्षी का आकार छोटा 3) लड़की की एक आँख गायब (4) लड़की के जूतों का रंग अलग (5) सूरज अतिरिक्त (6) लड़की के टी–शर्ट का रंग अलग (7) एक फूल अतिरिक्त (8) कछुए का आकार बड़ा

दिमागी कसरत

उपनाम, उपन्यास, उपलक्ष्य, उपकार, उपस्थित, उपलब्धि, उपचार, उपदेश, उपजाऊ, उपरना, उपहार, उपरांत।

बूझो तो जानें

(1) मुर्गा (2) गिलहरी (3) सारस (4) गिद्ध (5) बटेर

आप कितने सूक्ष्मदर्शी हैं ?

नम्बर 2 और 5 पक्षी एक से हैं।

वर्ग पहेली

1 हो	2 लि	का	3 द	4 ह	5 न	■	6 क
7 शि	व	■	8 ल	क	वा	■	हा
9 या	र	■	प	■	10 चा	11 श	नी
र	■	12 प्र	ति	13 का	र	क	■
■	14 र	■	■	र्य	■	15 ल	16 स
17 गु	ड़ी	18 प	ड़	वा	■	19 सू	र
ला	■	ह	■	ह	■	20 र	व
21 ल	ग	न	■	22 क	बू	त	र

सुडोकू

5	4	3	9	2	1	8	7	6
2	1	9	6	8	7	5	4	3
8	7	6	3	5	4	2	1	9
9	8	7	4	6	5	3	2	1
3	2	1	7	9	8	6	5	4
6	5	4	1	3	2	9	8	7
7	6	5	2	4	3	1	9	8
4	3	2	8	1	9	7	6	5
1	9	8	5	7	6	4	3	2

MORAL STORY

THE OAK AND THE REEDS

In a forest was a strong oak tree. Though quite young, it was firm. The oak was proud of its strength. Near him, several reeds grew. The oak often boasted to them about its strength. It always made fun of the reeds for having such weak stems. The reeds heard these things but kept quiet.

One day, a storm broke out in the forest. The trees swayed alarmingly. But the oak was confident that it would withstand the storm. However, the wind was so strong that after a while, the oak began to lose its strength. In a matter of time, its trunk broke and fell over.

When the storm waned, it noticed that the reeds were still standing.

"How are you still here when I fell?" it asked in amazement.

The reeds replied, "We bent over when the wind blew. So we did not break." The oak was silenced.

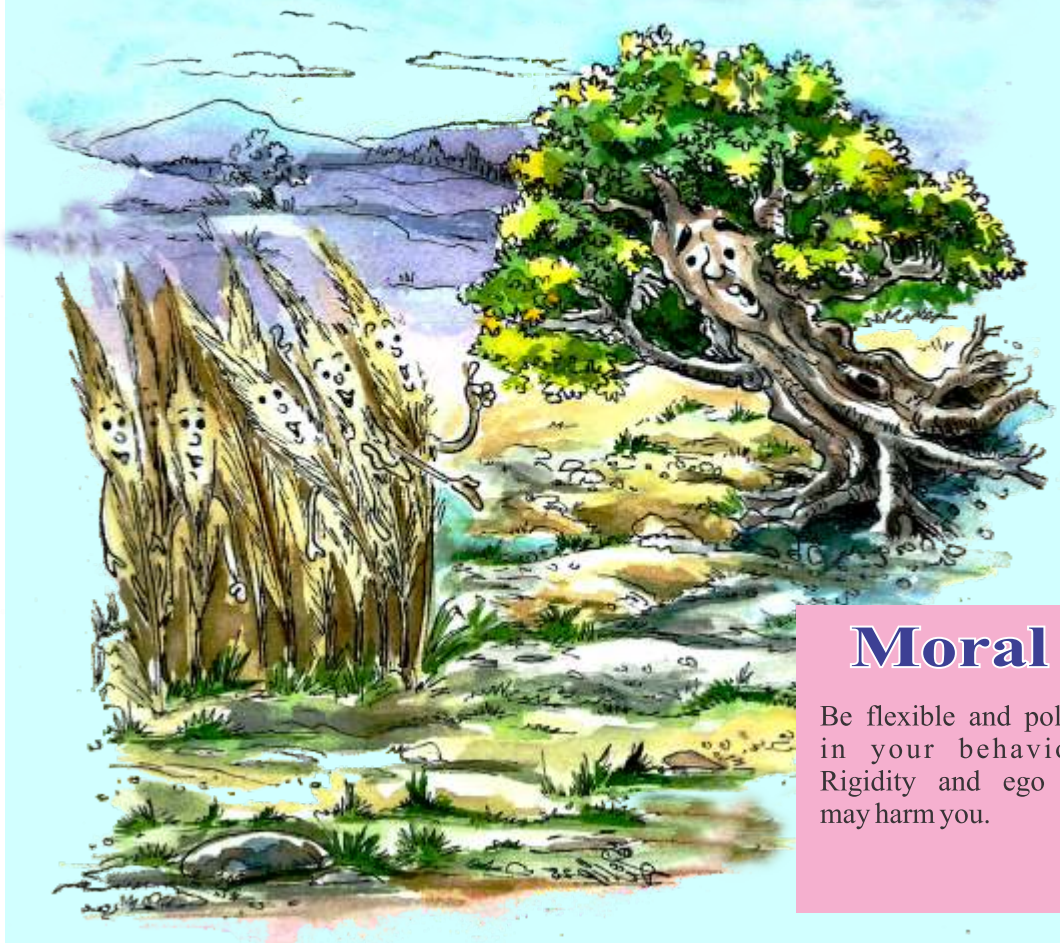

Moral

Be flexible and polite in your behavior. Rigidity and ego may harm you.

STORY

JO JEETA WOH SIKANDAR

"Hey guys, this year we have got a great chance of winning the house championship," Ejaz said.

Ejaz and his friends Suresh and Vicky were sitting in the football field on the second day of the three-day Annual Sports meet of their school. Their school DPS, Rourkela had four houses Jhelum, Chenab, Ganges and Yamuna. Ejaz and his friends belonged to Ganges house and Ejaz was the house captain. Ganges had been losing to its arch Rival Jhelum for the past nine years.

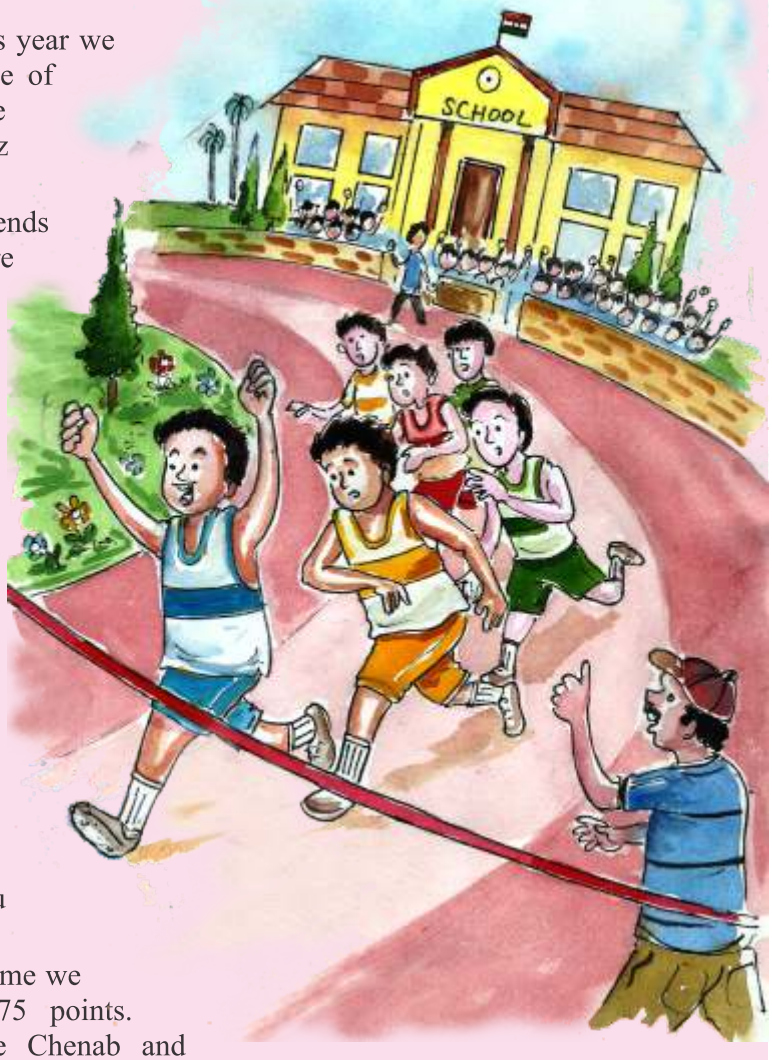

"How can you say that?" asked Vicky.

"Kindo Sir told me we have notched up 175 points. Jhelum has 180 while Chenab and Yamuna are way behind at 135 and 112."

"But Ejaz, Jhelum is in the lead, how do you then fancy our chances?"

"Tomorrow, we have three events – the finals of football, hockey and 100 metres sprint. In both football and hockey Yamuna and Chenab are in the fray that leaves only 100 metres."

"In that case we are doomed. Jhelum has the athletic captain and fastest sprinter of the school Yash in it." Suresh said, shaking his head.

"That's where you are wrong. In the first term this year, a new boy joined class nine. His name is Eklavya Tirkey and he is on a scholarship. I am sure he can give our resident champ Yash a run for his money." Ejaz replied.

***

Eklavya was of medium height and wiry with a friendly face and bright eyes. His greatest passion was running and he knew he was good at it.

In the heats, for the first time, the school saw Eklavya run. He and Yash topped in their respective groups.

Half an hour after the race, Yash and his friends went to Kindo Sir, "Sir, did you see Eklavya run?" asked Yash.

"Yes, I think he was great."

"But Sir, he should be disqualified," Amrit, the house captain of Jhelum said.

"Why?"

"He ran bare foot?"

"Did he? I didn't notice."

"But now that you know shouldn't you disqualify him? After all you have always been stressing how important a dress code is. The finals of the 100 metres will be in front of the entire school. Sir, do you think it will look nice if one of our upcoming athletes is running barefoot?" asked Yash.

"Okay. But I wont' disqualify him. I shall ask him to wear shoes and run in the finals."

* * *

"But why should he be forced to wear shoes?" Vicky and Ejaz asked together when they met Kindo Sir.

"There is a dress code in everything including sports. If Eklavya does well, he will represent our school in various competitions. Even if I allow him today, he will be disqualified later," Kindo Sir said.

"But Sir, he will not have enough time to practice."

"I am sorry my friends: no shoes – no run."

* * *

Ejaz took Eklavya on his bike to the nearest Bata Shoes outlet.

An hour later Eklavya was practising running in his new shoes.

"How does it feel?"

"Suffocating," Eklavya said with a wry smile.

* * *

At 4.55 Eklavya was at the starting line. He was in lane six while Yash was in lane one.

Eklavya had always enjoyed running. It had been his greatest love, his supreme passion. But today he was feeling tense. His feet were clammy and he was dying to get out of the stuffy shoes.

He knew he had to win this race. The hopes of the entire Ganges house were on him. But apart from the championship there was something else which he could barely define – his pride, his honour. This was his chance to prove he was a winner – a champ who could triumph against all odds.

"On your marks, get set, go." Pop went the gun and the runners took off.

Yash raced ahead, his long legs propelling him forward. Eklavya knew he had to conserve his energy for the final burst. With every step he took his feet seem to protest – not liking being stifled by cloth and leather. Seconds later Eklavya and Yash were neck and neck with the tape looming ahead.

contd. to page 51...

Science of Living

Tolerance

There are four types of balls:

1. A ball of candle wax melts to the Sun's heat.
2. A ball of sealing wax melts by the heat of the fire.
3. A ball of wood turns into ashes when put on fire.
4. A ball of clay turns into a solid red ball when put on fire.

Four boys take up study

The first one loses courage when he faces a little difficulty. He leaves school. He is like a ball of candle wax.

The second one loses courage when he faces a little more difficulty. He gives up studies. He is like a ball of sealing wax.

The third one loses courage when he faces much more difficulty. He gives up studies. He is like a ball of wood.

The fourth one does not lose courage, he tolerates and faces all types of difficulties. He becomes a learned person. He is like a ball of clay, which turns stronger in fire and becomes brighter.

One should not give up tolerance when faced with difficulties. He who remains tolerant in difficulties succeeds in life. One should not lose courage in difficulties. He who is courageous accomplishes something new in life.

Birthday Greetings

March 01

Aliya Chauhan
Bikaner(Raj.)

March 17

Khushi Kaushik
Bikaner(Raj.)

March 29

Rakesh Meghwal
Nimbahera(Raj.)

WONDROUS WEBS OF BEAUTY

Almost all house-proud homemakers take special care to see that their homes are kept free of cobwebs. For aren't cobwebs dangling from the ceiling a sure sign of an unkempt home? Few people realize therefore, what remarkable creations spiders' webs really are.

Spiders spin webs so that they can catch insects for their food. All spiders spin silk, but not all of them build webs. Some spiders only spin a single dragline with a sticky end. When any insect nears it, the spider swings the sticky line towards it and traps it!

Web building spiders build different types of webs as well – the orb, the mesh or tangle web, the sheet web, and the funnel and dome shaped web. Flies and other insects get trapped in the spiders web because the threads of the web are sticky, and hold fast anything that touches them. But amazingly, the spider himself does not get stuck in his own web, because he always leaves some of the threads on his web non-sticky, or dry, and these are the only 'pathways' that he carefully walks upon! If by chance he does tread the wrong way however, the oil on his feet, helps him to free himself from his own sticky web!

Spider silk begins as liquid protein in a gland in the spider's abdomen. It travels from the gland to a narrow duct before being squeezed out through one of the spider's six spinnerets. These are minute spinning nozzles at the spider's back end. The specialized proteins that make up spider silk are what make the spider's web nearly waterproof, insoluble, and protect it from bacteria and fungi and from drying out. Since spiders lose a lot of their nutrients when they spin their webs, they eat their old webs to recycle the protein before they start to make a new one!

Although spider's webs with their sparkling gossamer threads look like delicate lace, spider silk is enormously strong. Scientists have calculated that a strand of spider silk would have to be fifty miles long before it would break under its own weight. A thread of spider silk has greater tensile strength than steel of the same diameter, but is so elastic that it can stretch more than twenty-five percent of its normal length before breaking. Spider silk is also

more elastic than even the most stretchy nylon threads. One scientific study found that spider silk is so flexible and strong that if a spider's web was produced the width of a pencil, it would have the strength to stop a 747 aircraft moving at full speed!

Spider's silk is even superior to 'kevlar', the high-performance fibre that is used to make bulletproof vests. But while kevlar has to be manufactured at very high temperatures and under great pressures, and leaves behind toxic byproducts, the humble spider makes his silk at body temperature without any machines and gizmos! Some spiders can spin up to 2,000 feet of thread continuously, and spiders' webs have been found 20 miles out at sea, 3 miles high up in the sky and even atop Mount Everest.

Though the marvelous properties of spider silk are well known, and it has been used since times immemorial by people for personal ornamentation and for making fish nets and lines, spiders have never been used for silk production on large scale. This is because spiders are predators and cannibals, and if they are kept close together, they will immediately try to devour one another!

So, the next time you see a spider sitting on his web, perhaps you will look at him with new respect. For do you know anyone else who has made his home entirely by himself, of a material so strong and amazing that not all the technology of the modern world has been able to replicate it?

Santhini Govindan
Mumbai (Maharashtra)

contd. from page 49...

For Eklavya it was now or never. Picking up every ounce of energy he had he raced. His t-shirt was dripping, his feet were wet and his legs were aching. His feet simply flew and with one final lunge he crashed into the tape and fell in a heap. He didn't even know whether he had won or lost. All he knew was that he had tried his best.

"Eklavya!!" the roar was deafening. "Jo Jeeta Woh Sikandar."

It was only then that Eklavya realised that he had won and Ganges were the House Champions after nine long years.

* * *

After the presentation as Eklavya was walking away, he heard someone call his name.

It was Yash.

"Congrats!" Yash said offering his hand.

"Thanks!" Eklavya said.

"I am sorry, I thought if you run with shoes I shall be able to beat you. But you made me realise with or without shoes you are the real champion."

Eklavya's answer was his shy smile.

"Next month is the State level Athletic Championship. You will of course run the 100 metres. I also want you to be the most vital part of the relay team – the anchor," Yash said and walked away leaving behind a beaming Eklavya.

Ramendra Kumar
Bengaluru (Karnatak)

The unlucky man

An old man lived in a house alone.He had no wife or children and lived a miserable life.He never even bothered to clean his house.It was full of cobwebs.

One day a rich businessman came to his house.They conversed for some time.The businessman looked around and said. There is a treasure in your house which I need.

"I am offered a fat amount for this unkempt house. I may get more if I keep it clean", the old man thought.

Soon, he dusted away the cobwebs and thoroughly cleaned his house. Next day, he woke up early and waited for the business man. Finally he arrived. As soon as he entered the house, he noticed that the house looked different.

The cobwebs were missing.He looked disappointed and said,"You threw away all the valuable things. I was actually making a movie. For that I needed a house that was unkempt and infested with cobwebs, exactly like the one you had. Now that you have removed all those cobwebs, I no longer need this house," saying this, the businessman left.

WORLD'S BEST JUMPERS

Fleas are Among the world's best jumpers. Fleas use their toes and shins to jump. They can spring up to seven vertical inches, more than 80 times their height.

The old man was sad and repented the hurried way in which he dealt the situation and finally lost a fortune.

Clever children

Arya, I have an idea.
What?
Bhaka came back to take his scooter. Then children spat all over his vehicle.
Phu... phu...
What!
Hey rogues, you dirtied my scooter. Is this the place to spit?
Uncle, didn't you spit wherever you liked? So we can also do the same thing.
Anyway I will wipe it off with my kerchief.
Nice kids.
Forgive me children. What you said is right. I won't repeat this mistake.
Ok.Good uncle.

Tell Me Why?

Why does hair turn grey?

Each hair follicle contains a pigment called melanin — the same thing that colours our skin – that gives our hair its colour. As we get older, we produce less pigment, resulting in grey hair. When there are fewer pigment cells in a hair follicle, that strand of hair will no longer contain as much melanin and will become a more transparent colour — like grey, silver or white — as it grows. As people continue to get older, fewer pigment cells will be around to produce melanin.

Why do diamonds sparkle?

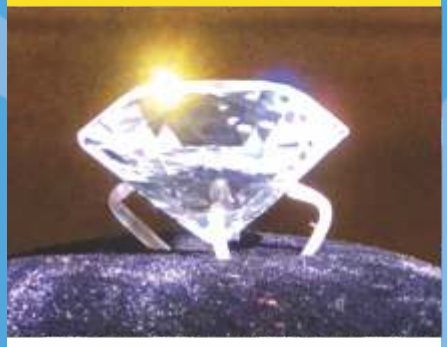

Diamonds are cut so that a light ray falling on the diamond is reflected multiple times inside the diamond and therefore sends light out in all directions. Actually, diamonds don't shine, they reflect. As the light moves through the diamond, it is scattered and fractured, creating the sparkle that diamonds are known for.

Why Hollywood is called the 'Tinsel Town'?

Hollywood is the home of the global movie industry. The name became renowned as the centre of the entertainment world and a place of glamour, glitter and fantasy. The term 'tinsel' is used to describe something that looks great but is without any important substance.

Tell Me Why?

Why does the right lung have three lobes?

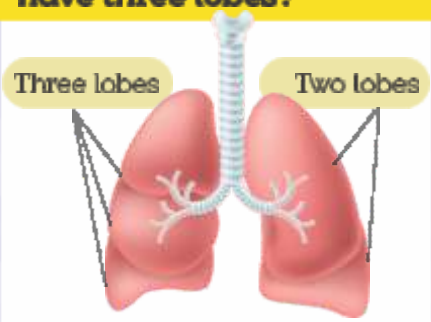

There are three lobes in the right lung and two in the left lung. The right lung is divided into three lobes – an upper, middle and a lower. The Lobes are just differential parts of the overall lung structure. The lobes themselves are structurally a way to distribute the mass and function of the lungs so that a catastrophic failure to one part may not necessarily destroy the entire organ. The left is smaller - most likely to accommodate the heart. The heart is in the volume on the left that is occupied by the Middle Lobe on the right.

Why pigeons were used as carriers of messages?

The homing pigeon is a variety of domestic pigeon derived from the rock pigeon, selectively bred for its ability to find its way home over extremely long distances. Because of this skill, homing pigeons were used to carry messages as messenger pigeons. Pigeons were effective as messengers due to their natural homing abilities.

Why do dogs pant on a hot day?

Once their body temperature rises, dogs can't sweat through their skin like we do to cool off. Dogs do sweat through their paw pads, but it's by panting that dogs circulate the necessary air through their bodies to cool down.

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2025-27
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

"अंतरिक्ष से पृथ्वी का पहला दृश्य जादुई है। यह बहुत ज़बरदस्त एहसास है कि पृथ्वी बहुत छोटी है। इसका मुझ पर बहुत असर हुआ। मैं इस धारणा से उबर नहीं पायी कि इतने छोटे से ग्रह पर, जीवन की इतनी छोटी डोर के साथ, कितना कुछ चलता रहता है। ऐसा लगता है मानो पूरा स्थान ही पवित्र हो।"

कल्पना चावला

जन्म : 17 मार्च 1962

निधन : 01 फरवरी 2003

कल्पना चावला करनाल, हरियाणा में जन्मी, एक भारतीय अमरीकी अन्तरिक्ष यात्री और अन्तरिक्ष शटल मिशन विशेषज्ञ थी। प्रथम भारतीय महिला अन्तरिक्ष यात्री कल्पना ने वैमानिक अभियान्त्रिकी में स्नातकोत्तर व पीएच. डी. की उपाधि पाई। इन्हें हवाई जहाज, ग्लाइडर व व्यावसायिक विमान चालन के उड़ान प्रशिक्षक का दर्जा हासिल था। नासा की सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक कल्पना का मात्र 41 वर्ष की उम्र में कोलंबिया अन्तरिक्ष यान दुर्घटना में निधन हो गया था।